www.deshkiupasana.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
RNI NO - UPHIN/2022/86937
जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE
सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 04 | अंक – 132 | जौनपुर शनिवार, 27 दिसम्बर 2025 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

वीर बाल दिवस बहादुर साहिबजादों के बलिदान को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने का दिन है : पीएम मोदी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। धानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि श्वीर बाल दिवसश श्रद्धा का दिन है, जो श्री गुरु गोबिंद सिंह के बेटों, बहादुर साहिबजादों के बलिदान को याद करने के लिए समर्पित है। 9 जनवरी, 2022 को श्री गुरु गोबिंद सिंह की जयंती पर, प्रधानमंत्री ने घोषणा की थी कि 26 दिसंबर को श्वीर बाल दिवसश के रूप में मनाया जाएगा, ताकि श्री गुरु गोबिंद सिंह के बेटों साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत को याद किया जा सके, जिनका अद्वितीय बलिदान पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। मोदी ने एक एक्स पोस्ट में कहा, ष्वीर बाल दिवस श्रद्धा का दिन है, जो बहादुर साहिबजादों के बलिदान को याद करने के लिए समर्पित है। हम

माता गुजरी जी के अटूट विश्वास और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की अमर शिक्षाओं को याद करते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह दिन साहस, दृढ़ विश्वास और धर्म से जुड़ा है और साहिबजादों का जीवन और आदर्श पीढ़ियों तक लोगों को प्रेरित करते रहेंगे। वह इस अवसर पर यहां एक कार्यक्रम को भी संबोधित करेंगे।वीर बाल दिवस के अवसर पर, भारत सरकार देश भर में भागीदारी वाले कार्यक्रम आयोजित कर रही है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को साहिबजादों के असाधारण साहस और सर्वोच्च बलिदान के बारे में शिक्षित करना और भारत के इतिहास के इन युवा नायकों के अदम्य साहस, बलिदान और वीरता का सम्मान करना और उन्हें याद करना है। इन गतिविधियों में कहानी सुनाने के सत्र, पाठ, पोस्टर बनाने और निबंध लेखन प्रतियोगिताएं शामिल होंगी। राष्ट्र वीर बाल दिवस मना रहा है। आज हम उन वीर साहिबजादों को याद करते हैं जो भारत का गौरव हैं। वे भारत के अदम्य साहस, वीरता और साहस की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं। उन वीर साहिबजादों ने उम्र और परिस्थितियों की सीमाओं को तोड़ दिया। वे क्रूर मुगल सल्तनत के विरुद्ध चट्टान की तरह खड़े रहे और धार्मिक कट्टरता और आतंक के अस्तित्व को जड़ से उखाड़ फेंका। ऐसे गौरवशाली अतीत वाला राष्ट्र कुछ भी हासिल कर सकता है।

नक्सल मुक्त भारत की ओर बड़ा कदम : अमित शाह

ओडिशा, (एजेंसी)। ओडिशा में नक्सल विरोधी अभियान लंबे समय से चल रहा है, लेकिन गुरुवार को सुरक्षा बलों को एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। कंधमाल जिले में हुई मुठभेड़ में प्रतिबंधित संगठन सीपीआई (माओवादी) के केंद्रीय समिति सदस्य और ओडिशा ऑपरेशन प्रमुख गणेश उइके समेत चार नक्सली मारे गए हैं। इसके साथ ही बीते तीन दिनों में मारे गए नक्सलियों की संख्या बढ़कर छह हो गई है। बता दें कि यह मुठभेड़ गंजामदृकंधमाल सीमा क्षेत्र में उस समय हुई जब सुरक्षा बलों को नक्सलियों की मौजूदगी की पुख्ता सूचना मिली थी। इसके बाद स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप, सीआरपीएफ, बीएसएफ और कंधमाल पुलिस की संयुक्त टीम ने इलाके में सर्च ऑपरेशन शुरू किया। गुरुवार सुबह अलग–अलग इलाकों में रुक–रुक कर गोलीबारी हुई, जिसमें चार नक्सली ढेर हो गए। मौजूद जानकारी के अनुसार, मारे गए नक्सलियों में 69 वर्षीय गणेश उइके भी शामिल है, जो तेलंगाना के नलगोंडा जिले का रहने वाला था और संगठन में बेहद प्रभावशाली माना जाता था। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वह

सीपीआई (माओवादी) की केंद्रीय समिति का सक्रिय सदस्य था और ओडिशा में संगठन की गतिविधियों को संचालित कर रहा था। ओडिशा के पुलिस महानिदेशक वाई. बी. खुरानिया ने बताया कि इस कार्रवाई में दो इंसास राइफल और एक .303 राइफल बरामद की गई हैं। उन्होंने कहा कि यह माओवादी संगठन के लिए बड़ा झटका है और इससे राज्य में उनकी कमर टूट गई है। गौरतलब है कि पिछले तीन वर्षों में सुरक्षाबलों ने खुफिया एजेंसियों के सहयोग से माओवादी नेतृत्व को लगातार निशाना बनाया है।

राजनाथ सिंह ने वाजपेयी की हाजिरजवाबी और पाकिस्तानी महिला के विवाह प्रस्ताव को संभालने के तरीके को याद किया

लखनऊ, (संवाददाता)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की हाजिरजवाबी और हास्यबोध तथा एक पाकिस्तानी पत्रकार के विवाह प्रस्ताव पर उनकी प्रतिक्रिया को याद किया। लखनऊ में श्राष्ट्र प्रेरणा स्थलश के उद्घाटन समारोह में अपने भाषण में सिंह ने याद दिलाया कि वाजपेयी की पाकिस्तान यात्रा के दौरान, एक पाकिस्तानी महिला पत्रकार ने उनके भाषण से प्रेरित होकर उन्हें

शादी का प्रस्ताव दिया था।मैं एक घटना साझा करना चाहूंगा। उनके भाषण से प्रेरित होकर, एक पाकिस्तानी पत्रकार ने कहा कि वह उनसे शादी करने के लिए तैयार है, लेकिन मेहर में जम्मू और कश्मीर को पाकिस्तान को सौंपने की मांग की। अटलजी ने मुस्कुराते हुए कहा, श्महोदया, मैं आपसे शादी करने के लिए तैयार हूं, लेकिन बदले में मुझे दहेज के रूप में पाकिस्तान चाहिएश,ष सिंह ने कहा। लखनऊ से सांसद राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत की राजनीति, समाज और संस्कृति में वाजपेयी का योगदान अमूल्य है। श्राष्ट्र प्रेरणा स्थलश का उद्घाटन अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर किया गया।अपने भाषण में मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक वैश्विक राजनेता बताया, जिन्होंने ष्विश्व मंच पर भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाया हैष। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी को 29 विदेशी राजकीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा गुरुवार को उद्घाटन किया गया राष्ट्र प्रेरणा स्थल एक ऐतिहासिक राष्ट्रीय स्मारक और स्थायी राष्ट्रीय महत्व के प्रेरणास्रोत परिसर के रूप में विकसित किया गया है।

वीर बाल दिवस के अवसर पर सीएम योगी आवास में कीर्तन समागम

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में शुक्रवार को वीर बाल दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी हिस्सा लिया। इस मौके पर सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के सिखों की आवाज सुनी। उनके समर्पण का सम्मान करते हुए 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस घोषित किया। इसे पूरे देश में एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में मनाया जा रहा है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सिख परंपरा काफी समृद्ध है. इन्होंने विपरीत परिस्थितियों में लड़ते हुए न केवल अपनी परंपरा को सुरक्षित–संरक्षित रखा, बल्कि देश व धर्म के लिए भी बलिदान देकर नई प्रेरणा प्रदान की. एक तरफ इनका गौरवशाली इतिहास है तो दूसरी तरफ

सुनते हैं कि काबुल में सिखों के दो, चार–दस परिवार ही बचे हैं. योगी आदित्यनाथ ने कहा कि, श्जब बांग्लादेश की घटना व पाकिस्तान के अंदर अत्याचार के बारे में सुनते हैं, तब सिख गुरुओं के त्याग–बलिदान का स्मरण होता है. सिख गुरुओं के आदर्श हमें आगे बढ़ने की ऊर्जा देंगे. उनका आशीर्वाद हमारी प्रेरणा है. उस प्रेरणा से आगे बढ़ेंगे, तब काबुल–बांग्लादेश होने से बच पाएंगे, तब किसी ननकाना साहिब के लिए आंदोलन–संघर्ष की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि वह हमें स्वतस्फूर्त भाव से प्राप्त होगा. मुख्यमंत्री आवास पर गुरुवार को वीर बाल दिवस (साहिबजादा दिवस) का मुख्य आयोजन किया गया. इस दौरान ऐतिहासिक समागम व 11,000 सहज पाठ का भी शुभारंभ हुआ. मुख्यमंत्री ने गुरु तेग बहादुर के श्लोकों पर आधारित पुस्तक का विमोचन भी किया।सीएम ने कहा कि देश के इस जुझारू व समृद्ध कौम ने सामर्थ्य, पुरुषार्थ व परिश्रम से मिसाल प्रस्तुत की है. कभी बड़ी संख्या में फौज में जाकर सिखों ने भारत की सुरक्षा के लिए खुद को समर्पित किया, लेकिन वे कौन दुश्मन हैं, जो उनके परिश्रम व पुरुषार्थ को कुंद करने की साजिश कर रहे हैं. युवा पीढ़ी को ड्रग की चपेट में लाने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं. इन्हें पहचानने और उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है. सिख–हिंदू एक दूसरे के पूरक हैं,।

विज्ञान और धर्म में कोई टकराव नहीं : मोहन भागवत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत इन दिनों आंध्र प्रदेश के तिरुपति में हैं। शुक्रवार को उन्होंने विश्व प्रसिद्ध तिरुपति मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा–अर्चना की। वहीं मंदिर पहुंचने पर तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। दर्शन के बाद, मंदिर के पुजारियों ने रंगनायका मंडपम में मोहन भागवत को रेशमी वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया और भगवान का प्रसाद प्रदान दिया। इसको लेकर तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के एक अधिकारी ने कहा, श्भागवत ने भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन किए और दर्शन के लिए ले जाने से पहले टीटीडी अधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

बता दें कि टीटीडी तिरुपति में श्री वेंकटेश्वर मंदिर का आधिकारिक संरक्षक है, जो दुनिया के सबसे अमीर हिंदू मंदिर में से एक है। इसके बाद आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत वहां से रवाना हुए। वे शुक्रवार से तिरुपति में राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले चार दिवसीय भारतीय विज्ञान सम्मेलन में शामिल होने के लिए पहुंचे। इस कार्यक्रम में केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत भी शामिल हुए हैं। यह कार्यक्रम 29 दिसंबर को समाप्त होगा। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को विज्ञान और धर्म के अंतर्संबंधों पर अपने विचार साझा किए। भारतीय विज्ञान सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान और धर्म के बीच कोई टकराव नहीं है, क्योंकि दोनों ही अलग–अलग रास्तों से एक ही सच्चाई की तलाश करते हैं। उन्होंने कहा धर्म को अक्सर गलत समझा जाता है, जबकि यह असल में श्सृष्टि के कामकाज को नियंत्रित करने वाला विज्ञानश है। उन्होंने कहा श धर्म कोई संप्रदाय नहीं है। यह वह कानून है जिससे सृष्टि चलती है। चाहे कोई इसे माने या न माने, कोई भी इसके दायरे से बाहर रहकर कार्य नहीं कर सकता।श उन्होंने यह भी कहा श्धर्म में असंतुलन पैदा होना विनाश की ओर ले जाता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान ने ऐतिहासिक रूप से धर्म से दूरी बनाए रखी, क्योंकि यह माना जाता था।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने फतेहगढ़ साहिब गुरुद्वारे में मत्था टेका

हरियाणा, (एजेंसी)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब के गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब में मत्था टेका, जहां गुरु गोबिंद सिंह की मां और दो छोटे बेटों के बलिदान की याद में तीन दिवसीय सभा बृहस्पतिवार को शुरू हुई। फतेहगढ़ साहिब में वार्षिक शहीदी सभा 25–27 दिसंबर तक आयोजित की जाती है। सैनी के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पंजाब इकाई के कार्यकारी अध्यक्ष अश्वनी शर्मा भी थे। उन्होंने छोटे साहिबजादों और माता गुजरी को श्रद्धांजलि देने के लिए मत्था टेका। सैनी ने कहा कि छोटे साहिबजादों की शहादत मानवता के इतिहास में अद्वितीय है और सत्य, धर्म एवं न्याय के मार्ग पर डटे रहने के लिए एक शाश्वत प्रेरणा के रूप में काम करती है। वहीं, शर्मा ने कहा कि गुरु साहिबान का बलिदान देश की आध्यात्मिक और नैतिक ताकत की नींव है। उन्होंने कहा कि शहीदी सभा घ्सिख इतिहास

की महान विरासत को याद करने का एक पवित्र अवसर है। शर्मा ने कहा कि साहिबजादों और माता गुजरी का बलिदान हर पीढ़ी को जुल्म के खिलाफ मजबूती से खड़े होने का एक शाश्वत संदेश देता है।

पंजाब के मुख्यमंत्री मान ने गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब में मत्था टेका

पंजाब, (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने शुक्रवार को गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब में मत्था टेका, जहां तीन दिवसीय शहीदी सभा का आयोजन हो रहा है। यह वार्षिक समागम 25 से 27 दिसंबर तक आयोजित

किया जाता है। यह आयोजन दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रों साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह तथा उनकी दादी माता गुजरी की स्मृति में किया जाता है। मान ने अपनी पत्नी के साथ 'छोटे साहिबजादों' और माता गुजरी के अद्वितीय शहादत को नमन किया। पत्रकारों से बातचीत में मान ने कहा कि गुरु गोबिंद सिंह के दोनों छोटे पुत्रों के सर्वोच्च बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दुनिया भर से लोग यहां आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारे में श्रद्धालुओं को प्रार्थना करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। मान ने बताया कि श्रद्धालुओं को गुरुद्वारा साहिब तक लाने–ले जाने के लिए ई–रिक्शा और शटल बस सेवाओं की व्यवस्था भी की गई है।

लालकिला बम विस्फोट और वायु प्रदूषण से बचने की चुनौती

नई दिल्ली, (एजेंसी)। 2025 का साल दिल्ली के लिए कई मायनों में इतिहास रचने वाला रहा है। एक समय वैकल्पिक राजनीति के प्रेरणा स्रोत बनकर उभरे अरविंद केजरीवाल की इसी साल के फरवरी में दिल्ली में हुए चुनावों में करारी हार हुई। शराब घोटाले में जेल गए और अपने सरकारी आवास पर भारी पैसा खर्च कर विवादों में घिरे केजरीवाल स्वयं अपनी सीट नहीं बचा सके। भाजपा 27 साल बाद दिल्ली की सत्ता में वापसी कर सकी और उसने दिल्ली में बुनियादी बदलाव करने का वादा किया है। साल बीतते–बीतते दिल्ली को लालकिले बम विस्फोट ने आहत कर दिया। दिल्ली की सरकार और प्रशासन के सामने इस बात की बड़ी चुनौती रहेगी कि वह दिल्ली को आतंकी खतरों से कैसे सुरक्षित रखती

है। वर्ष 2025 दिल्ली की स्थानीय राजनीति में बड़े बदलाव पैदा करने वाला साल रहा। इसी साल की शुरुआत में दिल्ली में विधानसभा चुनाव हुए और आम आदमी पार्टी सरकार की करारी हार हुई। शराब घोटाले में कई महीने जेल के अंदर रहे अरविंद केजरीवाल की करारी हार हुई और वे अपनी सीट तक हार गए। सरकार में नंबर दो रहे मनीष सिसोदिया भी अपनी सीट नहीं बचा सके। केजरीवाल की हार का अर्थ केवल एक राजनीतिक दल की एक चुनाव में हार तक सीमित नहीं है। उनकी हार ने आम आदमी पार्टी की भविष्य की राजनीतिक यात्रा पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। केजरीवाल की हार के बाद दिल्ली में भाजपा ने 27 साल बाद सरकार बनाने में सफलता हासिल की। पार्टी ने एक महिला रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाते हुए महिला मतदाताओं को विशेष संदेश दिया। भीड़ प्रबंधन न कर पाने के कारण दिल्ली में अनेक बार बड़ी दुर्घटनाएं घट चुकी हैं। इन दुर्घटनाओं में अनेक लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। 2025 भी इस मामले में अछूता नहीं रहा। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के लिए 16 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बड़ी संख्या में यात्री पहुंचे। भीड़ का सही प्रबंधन न कर पाने के कारण भगदड़ मची और इसमें 18 लोगों की दुखद मौत हो गई। वायु प्रदूषण केंद्र और दिल्ली सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। इस वर्ष वायु प्रदूषण का स्तर 500–600 अंक को पार करता रहा है। 400 पार एक्यूआई वाले दिनों की संख्या लगातार बढ़ती रही है।

संक्षिप्त खबरें

विदेश में राहुल गांधी पर नजर रखते हैं दूतावास के लोग

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के प्रमुख और वरिष्ठ कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने आरोप लगाए हैं। एक इंटरव्यू के दौरान सैम पित्रोदा ने कहा है कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के विदेश दौरों पर नजर रखी जाती है। उनके इस बयान को राहुल के हाल के जर्मनी दौरे के संदर्भ में देखा जा रहा है। बता दें कि सांसद राहुल गांधी के जर्मनी पहुंचने के बाद पहली तस्वीर सैम पित्रोदा के हवाले से ही सामने आई थी।सैम पित्रोदा ने भारतीय दूतावास के अफसरों को कटघरे में खड़ा किया है। सैम पित्रोदा ने कहा, राहुल गांधी जब भी विदेशी सरजमीं पर होते हैं, संबंधित भारतीय दूतावास के अधिकारी कांग्रेस सांसद पर नजर रखते हैं। कई बार विदेशी नेताओं को राहुल गांधी से न मिलने या मुलाकात से परहेज करने को भी कहा जाता है। राहुल संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान जर्मनी क्यों गए? इस सवाल पर सैम पित्रोदा ने कहा, विदेश यात्रा अचानक नहीं होती। महीनों पहले से कार्यक्रम बनने लगते हैं। योजनाएं पहले से ही तय हो जाती हैं।सैम पित्रोदा के अनुसार, उन्होंने खुद भारतीय दूतावास के अधिकारियों को राहुल की गतिविधियों पर नजर रखते देखा है। होटल, बैठक और यहां तक कि एयरपोर्ट पर भी लोग देखते रहते हैं। वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा, उनके पास लिखित सबूत नहीं हैं,।

हजारों सवालों के बीच खामोशी की ताकत : मनमोहन सिंह

नई दिल्ली, (एजेंसी)। हजारों जवाबों से अच्छी है मेरी खामोशी, न जाने कितने सवालों की आबरू रखी। देश के सबसे ताकतवर पद पर रहे मनमोहन सिंह के यह शब्द उन हजारों सवालों का जवाब था, जो उस समय विपक्ष में बैठने वाली भाजपा और दूसरे विरोधी दल उनकी चुप्पी पर उठाया करते थे।26 सितंबर 1932 को अविभाजित भारत के पंजाब में मनमोहन सिंह का जन्म हुआ था। देश के वित्त मंत्री बनने से पहले वे न तो राजनीति में रहे और न राजनीति से उनका कोई खास नाता था। हालात की मजबूरियों ने ही उन्हें पहले वित्त मंत्री और फिर प्रधानमंत्री बनाया। वे एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने कभी लोकसभा चुनाव नहीं जीता। वे राज्यसभा के जरिए चुनकर आते रहे और प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठकर देश को चलाया। प्रधानमंत्री के तौर पर 10 साल के कार्यकाल में मनमोहन सिंह ने बहुत कुछ देखा। देश को विकास की राह पर चलते देखा और अपनी ही सरकार को भ्रष्टाचार की गर्त में डूबते हुए भी देखा।इसी बीच सरल स्वभावी मनमोहन सिंह के सीने में विरोधियों के लिए जवाबों का समंदर उमड़ता रहा, बोलने के लिए लोग उकसाते रहे और उनकी चुप्पी पर सवाल उठाते रहे। उसी दौर में विपक्ष ने उनकी एक कमजोर प्रधानमंत्री की छवि बनाकर रख दी थी ।

संपादकीय

क्रिसमस पर उत्पात

दुनिया भर में क्रिसमस मनाने की खबरों के बीच भारत में ईसाईयों पर बढ़ते हमले चर्चा में आ गए हैं। खुद को हिंदू धर्म के रक्षक कहने वाले लोग जमकर अपने ही धर्म और संविधान दोनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। संविधान सभी धर्म के लोगों को बराबरी का हक देता है, लेकिन नरेन्द्र मोदी के बनाए नए भारत में ईसाइयों के लिए कोई जगह नहीं है, ऐसा हिंदुत्ववादी गुंडे कह रहे हैं। ओडिशा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़ ऐसे तमाम भाजपा शासित राज्यों से ईसाइयों को प्रताड़ित करने, चर्च में तोड़–फोड़ करने या उन लोगों पर हमले की खबरें आई हैं, जिन्होंने ईसाई न होते हुए भी क्रिसमस की खुशियां मनाई हैं।रायपुर के मैग्नेटो मॉल में क्रिसमस के लिए की गई सजावट को गुंडों ने तोड़–फोड़ कर नष्ट कर दिया। इसमें जो आर्थिक नुकसान हुआ वो तो अलग ही है, लेकिन उससे ज्यादा शहर की धार्मिक सद्भाव वाली छवि को क्षति पहुंची है। रायपुर में हमेशा से सभी धर्मों के लोग मिल जुल कर रहते आए हैं। होली और क्रिसमस, ईद या मोहर्रम सब परंपरागत तौर पर मनाए जाते रहे, लेकिन इस बार यहां की धार्मिक सद्भाव की चादर तार–तार होती दिखी है। राज्य में पहले भी 15 साल भाजपा की सरकार रही, मगर अभी जो नकारात्मक बदलाव दिखा है, क्या उसके पीछे केंद्र की मोदी सरकार का बढ़ावा है, यह विचारणीय है। इसी तरह ओडिशा भी अब फिर से धार्मिक भेदभाव को लेकर चर्चा में है। इसी ओडिशा में कुष्ठ रोगियों की सेवा करने वाले फादर ग्राहम स्टेंस को उनके दो मासूम बच्चों के साथ जिंदा जला दिया गया था। अब फिर से वैसी ही नफरत उभरती दिख रही है। सड़क किनारे सैंटा की टोपी बेचने वाले गरीब रेहड़ीवालों को गुंडे धर्म के नाम पर धमकाते दिखे। उत्तरप्रदेश के बरेली में चर्च में न केवल तोड़फोड़ की गई, बल्कि वहीं हनुमान चालीसा का पाठ भी किया गया, मानो इन गुंडों के लिए मंदिरों के दरवाजे बंद हो गए हैं। मध्यप्रदेश के जबलपुर में तो भाजपा की जिला उपाध्यक्ष अंजू भार्गव ने चर्च जाकर क्रिसमस के जश्न में दखल डाला और आरोप लगा कि नेत्रहीन छात्रों को ईसाई बनने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इस घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है जिसमें अंजू भार्गव एक नेत्रहीन महिला से हाथापाई करती नजर आ रही हैं। हालांकि अब उस महिला ने भी कहा है कि क्रिसमस मनाने से धर्म नहीं बदल जाता, और वहां किसी ने कोई दबाव नहीं डाला। उन्होंने कहा कि वो क्रिसमस मनाती हैं, इसका मतलब ये नहीं कि उन्होंने अपना धर्म बदल लिया है।ये सारी घटनाएं नरेन्द्र मोदी की जानकारी में ही हो रही हैं, क्योंकि देश के प्रधानमंत्री होने के नाते उन तक तो सारी खबरें पहुंचती ही होंगी। पता नहीं फिर कैसे वो इन हमलों से आंख फेरकर खुद चर्च जाकर क्रिसमस मनाते हुए फोटो खिंचवाते हैं और बताते हैं कि ईसाई समुदाय से उनका नाता कितना पुराना है। अगर नरेन्द्र मोदी ये सोचते हैं कि ऐसा करने से दुनिया में उनकी छवि धार्मिक सद्भाव वाले नेता की बनेगी तो वे गलत हैं। क्योंकि उनकी चर्च की तस्वीरों के साथ वो वीडियो भी दुनिया भर में पहुंच गए हैं, जिनमें भारत में ईसाइयों को डराया–धमकाया जा रहा है। आंकड़े भी इसकी गवाही देते हैं कि मोदी शासनकाल में अल्पसंख्यकों पर हमले बढ़े हैं।29 नवंबर, 2025 को 18 ईसाई संगठनों के संयुक्त आह्वान पर करीब दिल्ली में संसद के पास एक प्रदर्शन हुआ था जिसमें शिकायत की गयी कि सरकार ईसाइयों के खिलाफ बढ़ती हिंसा और भेदभाव को रोकने में नाकाम रही है। यूनाइटेड क्रिश्चियन फोरम (यूसीएफ) ने दावा किया है कि नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में ईसाइयों के खिलाफ हमलों में 500 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। फोरम का आरोप है कि–2014 में ईसाइयों के खिलाफ हिंसा की घटनाएं 139 थीं, जो 2024 तक बढ़कर 834 हो गईं यानी करीब 500 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पिछले 10 वर्षों में देशभर में ईसाइयों के खिलाफ 4,959 घटनाएं दर्ज की गई हैं, यानी औसतन हर साल लगभग 70 मामले सामने आए हैं। ईसाई संगठनों के प्रतिनिधियों का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग से बार–बार हिंसा रोकने की अपील की गई,।

न्याय देकर छीनने की नाइंसाफी

दिपक

विलंबित न्याय, न्याय से वंचित होने के समान हैश, काफी प्रचलित मुहावरा है। मगर न्याय देकर छीनने को क्या कहा जाए, इसके लिए भी कोई जुमला गढ़ने की जरूरत है। जिस तरह उन्नाव बलात्कार मामले के दोषी कुलदीप सिंह सेंगर को मिली उम्रकैद की सजा निलंबित की गई है और ऊपर से जमानत भी दे दी गई है, उसके बाद ऐसा ही लग रहा है कि न्याय के नाम पर क्या पीड़िता के साथ छलावा हुआ है। जैसे सीताजी की अग्निपरीक्षा लेने के बाद भी उनका परित्याग श्री राम ने किया था, जिसके बाद आखिरकार उन्हें धरती की शरण में ही जाना पड़ा, उसी तरह उन्नाव बलात्कार कांड की पीड़िता को नाइंसाफी से गुजरना पड़ रहा है। कायदे से तो जिस महिला पर उत्पीड़न हुआ है, उसकी न कोई परीक्षा लेनी चाहिए, न उसे किसी शर्मिंदगी का एहसास कराया जाना चाहिए। लेकिन समाज ऐसा ही है, जो बलात्कार पीड़िता को लगातार ये याद दिलाता है कि उसकी इज्जत अब छीन ली गई है, वह समाज में सिर उठाकर जीने लायक नहीं है। जबकि सिर झुकाकर सजा भोगने का काम अपराधी का होता है। दुख की बात ये है कि इस बार अपराधी न्यायालय के आदेश से सलाखों के बाहर आया है। हालांकि सबने देखा है कि उसे सलाखों के पीछे डालने में कितना वक्त और कितनी ताकत लगी।उप्र के उन्नाव जिले में 11 से 20 जून 2017 के बीच एक नाबालिक लड़की को अगवा कर बलात्कार के गंभीर आरोप विधायक कुलदीप सिंह सेंगर पर लगे थे। लेकिन सेंगर को गिरफ्तार करने में साल भर का वक्त लग गया। क्योंकि स्थानीय पुलिस सेंगर और उसके साथियों को बचाने में लगी थी। इस बीच पीड़िता के पिता पर सेंगर के लोगों की शिकायत पर आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया गया, जिसमें हिरासत में ही उनकी मौत हुई। उत्पीड़ना का ये सिलसिला यहीं नहीं थमा, फरवरी 2018 में सेंगर को गिरफ्तार तो किया गया, लेकिन 2019 में पीड़िता अपने रिश्तेदारों और वकील के साथ जिस कार में जा रही थी, उसे एक बिना नंबर प्लेट की ट्रक ने ठोकर मारी, जिसमें पीड़िता की दो महिला रिश्तेदारों की मौत हो गई, जो इस केस में अहम गवाह भी थीं। इसमें पीड़िता की जान बच गई। 28 जुलाई 2019 की इस सड़क दुर्घटना के बाद 29 जुलाई 2019 को सेंगर और नौ अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। फिर 30 जुलाई को पीड़िता का भारत के मुख्य न्यायाधीश को लिखा पत्र सार्वजनिक हुआ। 31 जुलाई को सर्वोच्च न्यायालय ने पत्र का स्वतरू संज्ञान लिया। 1 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने मामले से जुड़े पांच केस दिल्ली स्थानांतरित करने का आदेश दिया। 20 दिसंबर 2019 को ट्रायल कोर्ट ने सेंगर को आजीवन कारावास और 25 लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई। अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि सीबीआई पीड़िता और उसके परिवार के जीवन और स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए। इसमें जरूरत पड़ने पर सुरक्षित आवास और पहचान बदलने की व्यवस्था भी शामिल हो।लेकिन छह साल पहले जिसे पीड़िता के लिए न्याय समझा जा रहा था, उसे पलटते हुए अब दिल्ली हाई कोर्ट की एक बेंच ने मंगलवार 23 दिसंबर को सेंगर की सजा निलंबित कर दी है। जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद और जस्टिस हरीश वैद्यनाथन की बेंच ने पूर्व विधायक को 15 लाख रुपये के निजी मुचलके और समान राशि के तीन जमानतदार पेश करने का निर्देश दिया। जमानत की कुछ शर्तें भी हैं, जैसे सेंगर को दिल्ली में ही रहना होगा।

2025 में भाजपा और एनडी को मिली सफलताओं ने भविष्य की राजनीति की दिशा तय कर दी है

नीरज

साल 2025 भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के लिए एक ऐतिहासिक और निर्णायक वर्ष बनकर सामने आया। यह वर्ष केवल चुनावी आंकड़ों की कहानी नहीं बयां करके जा रहा है बल्कि उस गहरे जन विश्वास का साक्ष्य देकर जा रहा है जो भाजपा ने निरंतर अपने कार्य, नीति और संगठनात्मक अनुशासन से अर्जित किया है। साल की शुरुआत से लेकर अंत तक, चाहे दिल्ली विधानसभा चुनाव हों, विभिन्न राज्यों के नगर निकाय और पंचायत चुनाव हों या फिर बिहार विधानसभा का महासंग्राम, भाजपा ने हर मोर्चे पर यह साबित कर दिया कि वह आज भी जनता की पहली पसंद बनी हुई है। साल की शुरुआत दिल्ली विधानसभा चुनाव से हुई, जहां भाजपा ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि देश की राजधानी को स्थिर, सक्षम और दूरदर्शी शासन की आवश्यकता है। विकास, बुनियादी सुविधाओं, स्वच्छ प्रशासन और राष्ट्रीय दृष्टि के मुद्दों को केंद्र में रखकर लड़ा गया यह चुनाव मुफ्त सौगातों की राजनीति करने वालों पर भारी पड़ा। दिल्ली के मतदाता ने यह महसूस किया कि भाजपा केवल वादे नहीं करती, बल्कि परिणाम देती है। इस जीत ने वर्ष 2025 के राजनीतिक स्वर को साल के शुरू में ही तय कर दिया था। दिल्ली विधानसभा चुनावों के बाद महाराष्ट्र, गोवा, अरुणाचल प्रदेश, असम जैसे राज्यों में हुए नगर निकाय और पंचायत चुनावों में भाजपा की अपार सफलता ने यह साबित कर दिया कि पार्टी की पकड़ केवल विधानसभा और लोकसभा तक सीमित नहीं है। महाराष्ट्र के शहरी निकायों से लेकर असम और अरुणाचल के गांवों तक, भाजपा ने स्थानीय मुद्दों को समझते हुए विकास का भरोसा दिया। गोवा में स्थिर प्रशासन और पारदर्शिता की छवि ने मतदाताओं को प्रभावित किया, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और केंद्र सरकार की सक्रिय भागीदारी ने भाजपा को मजबूत आधार प्रदान किया। पंचायत और निकाय स्तर पर मिली ये जीतें इस बात का प्रमाण हैं कि भाजपा जमीनी राजनीति में भी अजेय होती जा रही है। भाजपा की इस निरंतर विजय का एक प्रमुख आधार है उसका मजबूत संगठन और बूथ स्तर तक फैला कार्यकर्ता नेटवर्क। पार्टी सभी चुनावों को एक मिशन के रूप में लड़ती है। हर बूथ पर कार्यकर्ता की जिम्मेदारी तय होती है, मतदाता से सीधा संवाद स्थापित किया जाता है और स्थानीय समस्याओं को एजेंडे में शामिल किया जाता है। यही कारण है कि भाजपा अक्सर वहां भी चमत्कार कर दिखाती है, जहां मुकाबला कठिन माना जाता है। संगठन की यह तल्लीनता और अनुशासन भाजपा को अन्य दलों से अलग खड़ा करता है। इस पूरी विजय यात्रा के केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व सबसे बड़ी शक्ति बनकर उभरा है। मोदी का नेतृत्व जनता को इसलिए भा रहा है क्योंकि उनमें निर्णय क्षमता, स्पष्ट दृष्टि और राष्ट्र प्रथम का भाव साफ दिखाई देता है। प्रधानमंत्री की कार्यशैली ने जनता के मन में यह भरोसा पैदा किया है कि देश सुरक्षित हाथों में है। चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल हो, आर्थिक सुधार हों या फिर गरीब और मध्यम वर्ग के कल्याण की योजनाएं, मोदी के नेतृत्व में लिए गए फैसलों ने भाजपा को एक विश्वसनीय राजनीतिक विकल्प के रूप में स्थापित किया है। चुनावों में यह भरोसा मतों में बदलता हुआ साफ नजर आता है। इसके अलावा, साल 2025 में पार्टी को नया राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष मिलना भी इस विजय गाथा का अहम अध्याय है। यह बदलाव भाजपा की विचार आधारित राजनीति का उदाहरण है। माना जा रहा है कि नए अध्यक्ष के साथ संगठन में नई ऊर्जा और नई रणनीति देखने को मिलेगी। नेतृत्व परिवर्तन को सहजता से स्वीकार करना भाजपा की आंतरिक लोकतांत्रिक परंपरा को दर्शाता है, जहां व्यक्ति से अधिक संगठन और विचारधारा को महत्व दिया जाता है। साथ ही बिहार में मंत्री रहे नितिन नबीन को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाना यह भी दर्शाता है कि भाजपा में कोई साधारण कार्यकर्ता भी अपने परिश्रम के चलते राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व करने की भूमिका में आ सकता है। इसके अलावा, एनडीए के सहयोगियों के साथ तालमेल भाजपा की एक और बड़ी ताकत साबित हुआ है। साल 2025 में यह साफ दिखा कि भाजपा गठबंधन को मजबूरी नहीं, बल्कि सामूहिक शक्ति के रूप में देखती है। क्षेत्रीय दलों को सम्मान, स्पष्ट भूमिका और साझा विकास एजेंडा देकर भाजपा ने एनडीए को अजेय गठबंधन में बदल दिया। इसी एकजुटता का परिणाम रहा कि देश के अलग अलग हिस्सों में एनडीए का विजय रथ बिना रुके आगे बढ़ता रहा। साल के अंत में बिहार विधानसभा चुनाव इस पूरे वर्ष की राजनीति

का निर्णायक मोड़ बने। बिहार में भाजपा ने जातीय राजनीति से ऊपर उठकर विकास, रोजगार, कानून व्यवस्था और युवाओं के भविष्य को केंद्र में रखा। आक्रामक लेकिन तथ्य आधारित प्रचार ने जनता को यह सोचने पर मजबूर किया कि राज्य को स्थायी और मजबूत शासन की जरूरत है। बिहार की जीत ने यह साबित कर दिया कि भाजपा सामाजिक समीकरणों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में सफल रही है। देखा जाये तो भाजपा की लगातार जीत का मूल कारण है जन विश्वास। यह विश्वास भाषणों से नहीं, बल्कि काम से बना है। गरीब कल्याण, किसान सहायता, महिला सशक्तिकरण, बुनियादी ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर भारत की मजबूत उपस्थिति ने आम नागरिक के मन में गर्व और भरोसा दोनों को मजबूत किया है। विपक्ष जहां आरोपों और भ्रम की राजनीति में उलझा रहा, वहीं भाजपा ने हर सवाल का जवाब अपने काम से दिया। बहरहाल, साल 2025 की यह विजय गाथा स्पष्ट संकेत देती है कि भाजपा केवल वर्तमान की सत्ता नहीं, बल्कि भविष्य की राजनीति की दिशा तय करने वाली शक्ति बन चुकी है। मजबूत नेतृत्व, संगठित कार्यकर्ता, सशक्त एनडीए और अटूट जन समर्थन के साथ भाजपा का राजनीतिक अभियान लगातार आगे बढ़ रहा है और आने वाले वर्षों में भी यह विजय क्रम थमता हुआ नहीं दिखता।

अरावली की चिन्ता: नारे से आगे, अस्तित्व की लड़ाई

ललित

अरावली पर्वत शृंखला की नई परिभाषा को लेकर उठा विवाद अब जन–आन्दोलन का रूप ले रहा है। इसी के अन्तर्गत अरावली बचाओ की चिन्ता–यह केवल भावनात्मक आह्वान नहीं, बल्कि भारत के पर्यावरणीय भविष्य की जीवनरेखा है। गुजरात से लेकर दिल्ली तक फैली अरावली पर्वतमाला पृथ्वी की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। यह पर्वत केवल पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि जल, जंगल, जैव–विविधता, जलवायु संतुलन और मानव जीवन के लिए एक प्राकृतिक कवच है। आज जब खनन, शहरीकरण और विकास की आड़ में इस पर्वतमाला को टुकड़ों में बांटने की कोशिशें हो रही हैं, तब यह प्रश्न केवल पर्यावरण का नहीं, बल्कि मनुष्य जाति के अस्तित्व का बन गया है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि अरावली को लेकर सरकारों की चिन्ता व्यर्थ न जाये, कोई सकारात्मक रंग लाए। पहाड़ी इलाकों के खनन, उपेक्षा एवं लोभवृत्ति पर विचार करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारों की उपेक्षा की वजह से अरावली के बड़े हिस्से का खनन ही नहीं हुआ, आमजन एवं प्रकृति–पर्यावरण रक्षा का यह कवच ध्वस्त भी हुआ है। अरावली की आयु भूगर्भीय दृष्टि से करोड़ों वर्षों में आंकी जाती है। यह हिमालय से भी पुरानी है। यही कारण है कि अरावली का स्वरूप अपेक्षाकृत निचला और क्षरित दिखाई देता है, किंतु इसका महत्व कहीं अधिक गहरा है। राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और दिल्ली के बड़े हिस्सों में वर्षा जल का संचयन, भूजल रिचार्ज और मरुस्थलीकरण पर नियंत्रण अरावली के कारण ही संभव है। थार मरुस्थल को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकने में अरावली की भूमिका किसी अदृश्य दीवार की तरह है। आज के समय में पर्यावरणीय संकट बहुआयामी हो चुका है–जल संकट, वायु प्रदूषण, जैव–विविधता का क्षय, जलवायु परिवर्तन और अनियंत्रित शहरी विस्तार। इन सभी चुनौतियों का एक साझा समाधान अरावली जैसी प्राकृतिक संरचनाओं का संरक्षण है। दुर्भाग्यवश, खनन और निर्माण गतिविधियों ने इस पर्वतमाला को गहरे घाव दिए हैं। पत्थर, संगमरमर और अन्य खनिजों के लिए की जा रही अंधाधुंध खुदाई ने न केवल पहाड़ों को खोखला किया है, बल्कि आसपास के गांवों, नदियों और जंगलों को भी संकट में डाल दिया है। लगातार संकट से घिर रही अरावली को बचाने के लिये एक याचिका 1985 से न्यायालय में विचाराधीन है। हालांकि इस याचिका का ही नतीजा है कि अरावली का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा संरक्षित श्रेणी में आता है। वैसे अब समय आ गया है कि अरावली को पूरी तरह से खनन–मुक्त रखने का फैसला किया जाये। अब भी खनन जारी रहा तो उससे होने वाले लाभ से कई गुणा ज्यादा कीमत हमें पर्यावरण के मोर्चे पर चुकानी पडेगी। सुप्रीम कोर्ट ने समय–समय पर अरावली के संरक्षण को लेकर गंभीर टिप्पणियां की हैं। न्यायालय का दृष्टिकोण स्पष्ट रहा है कि पर्यावरणीय संतुलन को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों पर रोक लगनी चाहिए और विकास के नाम पर प्रकृति के विनाश को वैधता नहीं दी जा सकती। इसके बावजूद, विभिन्न स्तरों पर नियमों की व्याख्या और पुनर्व्याख्या के जरिए खनन को अनुमति देने के प्रयास होते रहे हैं। विशेष रूप से "100 मीटर ऊंचाई" जैसे मानदंडों के आधार पर पर्वतों को परिभाषित करना और उससे नीचे की संरचनाओं को खनन योग्य मानना एक खतरनाक प्रवृत्ति है। यह तर्क न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से कमजोर है, बल्कि पर्यावरणीय समझ के भी विपरीत है। खनन की वजह से अरावली की छलनी हो चुकी है। पर्वत केवल ऊंचाई से नहीं पहचाने जाते, बल्कि उनके भूगर्भीय ढांचे, जलधारण क्षमता और पारिस्थितिकी तंत्र से उनकी पहचान होती है। 100 मीटर से कम ऊंचाई वाले पहाड़ भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने ऊंचे पर्वत। यदि इस तर्क को स्वीकार कर लिया जाए, तो धीरे–धीरे पूरी अरावली को छोटे–छोटे हिस्सों में बांटकर समाप्त किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण अल्पकालिक आर्थिक लाभ को दीर्घकालिक पर्यावरणीय सुरक्षा से ऊपर रखता है। राजस्थान सरकार की कुछ पहलें संरक्षण की दिशा में सराहनीय कही जा सकती हैं, जैसे वन क्षेत्रों की अधिसूचना, अवैध खनन पर कार्रवाई और पर्यावरणीय स्वीकृतियों की सख्ती। किंतु इन प्रयासों के समानांतर ऐसी नीतिगत ढील भी दिखाई देती है, जो खनन और रियल एस्टेट गतिविधियों को बढ़ावा देती हैं। केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर यह तर्क दिया जाता है कि नियंत्रित खनन से विकास संभव है। परंतु अनुभव बताता है कि "नियंत्रित" शब्द व्यवहार में अक्सर अर्थहीन हो जाता है। भले ही वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव स्पष्टीकरण दे रहे हैं कि सिर्फ 277 वर्ग किमी में ही खनन की अनुमति है। उन्होंने आश्वस्त किया है कि नई परिभाषा से खनन बढ़ेगा नहीं, बल्कि अवैध खनन रूकेगा। विकास और पर्यावरण को आमने–सामने खड़ा करना एक पुरानी भूल है। सच्चा विकास वही है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाकर हो। अरावली का संरक्षण विकास विरोधी कदम नहीं, बल्कि दीर्घकालिक विकास की शर्त है। जिन क्षेत्रों में अरावली को नुकसान पहुंचा है, वहां जल स्तर गिरा है, तापमान बढ़ा है और जैव–विविधता घट गई है। दिल्ली–एनसीआर की जहरीली हवा और जल संकट में अरावली के क्षरण की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अरावली में वन्यजीव लगभग खत्म होने को है। खनन के विकल्प पर विचार करना होगा। खनन मुख्यत पत्थर के लिये होता है और पत्थरों से सुन्दर घर बनाने की परम्परा सदियों से चली आ रही है, इस परम्परा पर नये सिरे से चिन्तन करने की अपेक्षा है। घर या इमारत बनाने के दूसरे संसाधन पर सोचना होगा। जिनसे मकान तो बहुत बन जायेंगे, पर कटने वाले पहाड़ फिर कभी खड़े नहीं होंगे। पर्यावरण एवं प्रकृति रक्षक ये पहाड़ कहां से लायेंगे? सर्वोच्च न्यायालय ने अरावली के साथ–ही–साथ उत्तराखण्ड में भी जंगलों में हो रहे अतिक्रमण के खिलाफ चिन्ता का इजहार किया है। लेकिन अदालतों के साथ सरकारों को भी पर्यावरण, प्रकृति, पहाड़, पहाड़ी जंगलों एवं वन्यजीवों पर कड़ा रुख अपनाना होगा और इन्हें सर्वोच्च प्राथमिकता में रखना होगा। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो विश्व के अनेक देशों ने अपनी प्राचीन पर्वतमालाओं और प्राकृतिक संरचनाओं को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में संरक्षित किया है। यूरोप में आल्प्स, अमेरिका में रॉकी पर्वत और चीन में पीली नदी के बेसिन क्षेत्र इसके उदाहरण हैं। इन क्षेत्रों में खनन और निर्माण पर कठोर नियंत्रण है, क्योंकि वहां यह समझ विकसित हो चुकी है कि प्रकृति की कीमत पर आर्थिक समृद्धि टिकाऊ नहीं होती। भारत में भी इस सोच को अपनाने की आवश्यकता है। अरावली केवल जल का स्रोत नहीं हेय यह जैव–विविधता का आश्रय है। यहां पाए जाने वाले वनस्पति और जीव–जंतु पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जंगलों की कटाई और पहाड़ों की खुदाई से वन्यजीवों का आवास नष्ट होता है, जिससे मानव–वन्यजीव संघर्ष बढ़ता है। यह समस्या केवल पर्यावरणीय नहीं, सामाजिक भी है। आज देशभर में अरावली के संरक्षण को लेकर आंदोलन हो रहे हैं। ये आंदोलन इस बात का संकेत हैं कि समाज अब खामोश नहीं रहना चाहता। नागरिकों, पर्यावरणविदों, न्यायपालिका और नीति–निर्माताओं के बीच संवाद आवश्यक है। यह समय भावनात्मक नारों से आगे बढ़कर ठोस नीतिगत निर्णय लेने का है–खनन पर पूर्ण प्रतिबंध, पुनर्वनीकरण, जल संरक्षण परियोजनाएं और स्थानीय समुदायों की भागीदारी। बीज अगर आज प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्यार का बोए जाएंगे, तो कल स्वच्छ हवा, पर्याप्त जल और सुरक्षित भविष्य का फल मिलेगा। अरावली बचेगी तो भारत खुशहाल रहेगा, यह केवल कविता की पंक्ति नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक सत्य है। धरती मां की रक्षा करना हमारा अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी है। यदि आज हमने लालच को प्राथमिकता दी, तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। अंततः, अरावली का सवाल केवल एक पर्वतमाला का नहीं, बल्कि उस सोच का है जो विकास को विनाश से अलग देखती है। इतिहास उन्हीं समाजों को याद रखता है, जिन्होंने प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर प्रगति की। आइए, हम भी वही इतिहास लिखें, जहां हर आवाज शोर बने और अरावली के साथ जीवन भी भरपूर सुनिश्चित हो।

जी राम जी या रोजगार गारंटी को जै राम जी

मोहन

दुनिया भर की आर्थिक नीतियों और विकास पर नजर रखने वालों की यह चिंता मनरेगा के शुरुआती परिणामों और क्रांतिकारी स्वरूप को लेकर है। यूपीए सरकार द्वारा शुरू इस योजना को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले काफी कुछ कह चुके हैं लेकिन इसके लाभ को देखकर उन्होंने भी सत्ता में आने पर इसे हटाने की हिम्मत नहीं की। और जब करोना के लक्षण दिखते ही एक बार में राष्ट्रव्यापी लाकड़ाउन का जैसा गलत फैसला हो गया तब मनरेगा ने जिस तरह समाज के सबसे कमजोर समूह की मदद की उसे देखकर वे भी प्रभावित हुए और मनरेगा का बजट बढ़ा ही।

मात्र दो दिन के हंगामे या चर्चा के बाद जो बिल पास हो चुका है और जिस पर राष्ट्रपति के भी दस्तखत हो चुके हैं उसको लेकर अभी भी विपक्ष और श्षडयंत्रकारियोंश को कोसना भी इस बात का प्रमाण हो सकता है कि सरकार ने मनरेगा के स्वरूप में जो बदलाव किए हैं उनके पीछे प्रशासनिक और वित्तीय मसलों के साथ राजनैतिक मसले भी जुड़े हुए हैं। और अगर यह बिल पेश करने वाले मंत्री शिवराज सिंह चौहान अभी भी इस पर राजनैतिक बयान दे रहे हैं तो यह भाजपा द्वारा अपनी चलाने और उसका राजनैतिक लाभ लेने का ही प्रमाण है। यह सही है कि संख्या–बल में हारा विपक्ष तो इस योजना से गांधी का नाम हटाने को मुख्य मुद्दा बना रहा है लेकिन दुनिया भर के प्रमुख अर्थशास्त्रियों समेत देश के बौद्धिक जमात में भी इसे लेकर बेचैनी जाहिर हो रही है, मनरेगा लाने के पीछे मुख्य शक्ति रहीं सोनिया गांधी और लगभग पूरा विपक्ष इसके खिलाफ ताल ठोंक रहा है तो एनडीए के घटक दलों से ही नहीं भाजपा के अंदर से भी कुछ असहमति के स्वर सुनाई दे रहे हैं। जोजेफ स्टिगलिट, थामस पिकेटी, जेम्स गालब्रेथ, इजाबेले फेरारेस, डेरिक हैमिल्टन, मारिआना मझाकूटो, इमरान वेलोडिया, रैंडल ग्रे और पवलिना चेरनेवा जैसे ख्याति प्राप्त अर्थशास्त्रियों ने साझा बयान जारी करके मनरेगा के स्वरूप में हुए बदलावों पर आपत्ति जताई है। दुनिया भर की आर्थिक नीतियों और विकास पर नजर रखने वालों की यह चिंता मनरेगा के शुरुआती परिणामों और क्रांतिकारी स्वरूप को लेकर है। यूपीए सरकार द्वारा शुरू इस योजना को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले काफी कुछ कह चुके हैं लेकिन इसके लाभ को देखकर उन्होंने भी सत्ता में आने पर इसे हटाने की हिम्मत नहीं की। और जब करोना के लक्षण दिखते ही एक बार में राष्ट्रव्यापी लाकड़ाउन का जैसा गलत फैसला हो गया तब मनरेगा ने जिस तरह समाज के सबसे कमजोर समूह की मदद की उसे देखकर वे भी प्रभावित हुए और मनरेगा का बजट बढ़ा ही। इधर फिर से मनरेगा उपेक्षित होने लगा था और उसकी गलतियों और कमियों पर तो ध्यान नहीं ही दिया जा रहा था, उसमें घोटाले बढ़े थे और किसी मामले में दोषियों को सजा देने का काम नहीं हुआ। मजदूरी देने में भी बहुत देरी होने से उसका असली मकसद ही खत्म हो रहा था। लंबे अनुभव से कुछ बदलावों की जरूरत मानी जा रही थी। नए कानून में रोजगार के दिनों की संख्या सौ से बढ़ाकर सवा सौ और खेती के समय दो महीने मनरेगा के काम बंद रखने जैसे दो बदलावों को आप इस श्रेणी में रखना चाहें तो रख सकते हैं लेकिन जैसा कानून बना है उसमें तो पूरी योजना ही हाशिये पर आ जाएगी, फिर ये सुधार किस काम के होंगे। बीस साल पहले जब महाराष्ट्र के छोटे अनुभव को आधार बनाकर देश भर के लिए रोजगार गारंटी का कानून बना तो दुनिया का ध्यान उसकी तरफ लगा हालांकि तब भारत विश्व गुरु होने का दावा नहीं करता था। लंबी सार्वजनिक और संसदीय चर्चा के बाद यह कानून बना था। संसदीय समिति तो भाजपा के नेता कल्याण सिंह की अगुवाई वाली थी और इसमें भी सर्वसम्मति बनी थी। तब भी इसके खर्च और लाभ को लेकर इसका विरोध करने वाले थे लेकिन मुख्यतरू यूपीए की अध्यक्ष सोनिया गांधी के अड़े रहने से यह कानून बना। इसके बाद ही शिक्षा का अधिकार, भोजन का अधिकार और सूचना का अधिकार जैसे अधिकार आधारित कानून बने। जब पाँच करोड़ सबसे गरीब परिवारों को 200 करोड़ कार्यदिवस का रोजगार दिया गया तो दुनिया भर में इसकी धूम मची क्योंकि इस पैमाने पर गरीबों को सीधी मदद और गाँव तथा पिछड़े इलाके में उपयोगी सामाजिक परिसंपत्तियों के निर्माण की ऐसी कोई योजना तब तक विश्व में कहीं भी नहीं चल रही थी। रोजगार की गारंटी का पक्ष तो विलक्षण था ही, इसमें आधे से ज्यादा कामगार महिलाएं थी, दलितों और आदिवासियों का अनुपात चालीस फीसदी था। कुंआ, तालाब, सड़क, फलदार पेड़, छोटे बांध जैसी परिसंपतियों का निर्माण और जीर्णोद्धार गांवों की सहमति से हुआ तो उसका लाभ उनको लगातार हुआ। प्रशासनिक खर्च पांच फीसदी से भी

कम था। रोजगार और परिसंपत्तियों के निर्माण के साथ तीसरा और सबसे बड़ा लाभ यह हुआ की ग्रामीण क्षेत्र में औसत दिहाड़ी मजदूरी बढ़ गई। सैकड़ों अध्ययनों से इनके लाभ ही जाहिर हुए। कुछ कमजोरियां भी दिखीं और कुछ नए सुझाव भी आये जिनहे लागू करना मुश्किल न था। खर्च भी हर अनुमान से नीचे रहा –जीडीपी के एक फीसदी से कम।जब तक सोनिया गांधी ने अलग से वीडियो जारी करके अपने इस प्रिय कानून को बचाने के लिए संघर्ष की घोषणा नहीं की तब तक कांग्रेस और विपक्ष के विरोध का मुख्य मुद्दा इस योजना से महात्मा गांधी का नाम हटाने और अंग्रेजी–हिन्दी के लंबे और ऊटपटांग नाम से बनाए गए श्जी राम जीश्च ही बनता दिख रहा था। वे इसके सामाजिक, आर्थिक और अन्य पक्षों को भूल से गए लगते थे। भाजपा के गांधी विरोध और राम जी प्रेम की राजनीति अनजानी नहीं है। लेकिन बिल के स्वरूप के बदलाव से पीछे ज्यादा बड़े कारण है। राज्यों से बिना चर्चा उन्हें ही रोजगार का गारंटर बनाया गया है लेकिन पैसा देना न देना केंद्र के विवेक पर निर्भर कर दिया गया है। इससे ज्यादा परेशानी का सवाल धन और खर्च का है जिसमें पहले राज्यों का हिस्सा दस फीसदी था तो अब चालीस फीसदी हो गया है। इस योजना की जरूरत सबसे ज्यादा गरीब राज्यों को है लेकिन संसाधन जुटाने के बोझ में उनको कोई रियायत नहीं मिली है। अब अगर वे चालीस फीसदी खर्च के डर से आगे नहीं बढ़ेंगे तो केंद्र वैसे ही हाथ धोकर किनारे खड़ा हो जाएगा।

जाति विशेष की बैठक करने वाले जनप्रतिनिधियों को भाजपा अध्यक्ष की चेतावनी

लखनऊ, (संवाददाता)। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने भाजपा जनप्रतिनिधियों को स्पष्ट रूप से आगाह किया है कि वे किसी तरह की नकारात्मक व जातिवादी राजनीति का शिकार न बनें। मीडिया में प्रसारित एक जाति विशेष के भाजपा जनप्रतिनिधियों की बैठक से संबंधित खबर को लेकर चौधरी ने कहा है कि इस तरह का कोई भी कृत्य भाजपा के संविधान एवं आदर्शो के अनुरूप नहीं माना जाना चाहिये। भाजपा सिद्धांतों और आदर्शों पर आधारित राजनीतिक दल है। भाजपा और उसके कार्यकर्ता परिवार या वर्ग विशेष को लेकर राजनीति करने में विश्वास नहीं करते हैं। प्रदेश

अध्यक्ष ने कहा कि मीडिया में प्रसारित एक कथित समाचार के अनुसार पिछले दिनों विधानसभा सत्र के दौरान कुछ जनप्रतिनिधियों द्वारा विशेष भोज का आयोजन किया गया था जिसमें अपने समाज को लेकर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि हमने उन जनप्रतिनिधियों से बातचीत की है। सभी को स्पष्ट कहा गया है कि ऐसी कोई भी गतिविधि भाजपा की संवैधानिक परंपराओं के अनुकूल नहीं है। जनप्रतिनिधियों से भविष्य में ऐसी गतिविधियों के लिए सतर्कता बरतने को कहा है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा है कि, पार्टी ने ऐसे सभी जनप्रतिनिधियों से कहा है कि, इस तरह गतिविधियों से समाज में गलत संदेश प्रचारित होता है। भविष्य में अगर भाजपा के किसी जनप्रतिनिधि द्वारा इस तरह की गतिविधियों को दोहराया गया तब ऐसी स्थिति में पार्टी के संविधान के अनुरूप अनुशासनहीनता माना जाएगा। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी ने कहा है कि भाजपा विविधितापूर्ण लोकतंत्र में अपनी सर्वव्यापी पहचान आधारित राजनीति को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा व्यापक रूप से प्रतिरूपित विकासवादी राजनीति और राष्ट्रवाद के सामने प्रदेश के अंदर विपक्ष की जाति आधारित राजनीति का अंत हो रहा है। प्रदेश में भाजपा सामाजिक न्याय, सर्वस्पर्शी एवं सर्वव्यापी राजनीति को स्थापित कर चुकी है। विकास व आदर्शों पर आधारित इस मॉडल ने उत्तर प्रदेश में जाति की राजनीति करने वाले उत्तराधिकारियों को पराजित कर दिया है। प्रदेश में लगातार बदल रहे राजनीतिक परिदृश्य में जाति पहचान के आधार पर राजनीति करने वाले सपा, बसपा और कांग्रेस जैसी पार्टियों का भविष्य अन्धकारमय है। इसके कारण ऐसे दल भाजपा के खिलाफ अंधेरे में तीर छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे जनप्रतिनिधि भाजपा की मर्यादा व अनुशासन में कार्य करते है। भाजपा के जनप्रतिनिधियों का ऐसे नकारात्मक नैरेटिव से बचना चाहिए।

किसान के घर से जेवरात व नकदी चोरी

लखनऊ, (संवाददाता)। सिसेंडी इलाके के गांव इमलिहाखेड़ा में किसान के घर के मुख्य दरवाजे का ताला तोड़कर चोर अलमारी में रखे जेवरात व नकदी उठा ले गए। सोहरामऊ उन्नाव के चौपई गांव के किसान अनुज शुक्ला ने बताया कि छह माह पहले ही इमलिहाखेड़ा में सिसेंडी–मौरावां मार्ग पर मकान बनवाया है। मंगलवार शाम वह परिवार समेत गांव गए थे। बुधवार की शाम तीन बजे जब वापस आए तो दरवाजे का ताला टूटा था और घर का पूरा सामान बिखरा पड़ा था। चोर अलमारी में रखे तीन लाख रुपये कीमत के जेवरात व 25 हजार रुपये उठा ले गए।

संक्षिप्त खबरें

आग लगने से गंभीर रूप से झुलसे अधेड़ की इलाज के दौरान मौत

लखनऊ, (संवाददाता)। अमेठी जिले के क्षेत्र के दरखा सुंदरपुर गांव में बुधवार रात संदिग्ध परिस्थितियों में आग लगने से गंभीर रूप से झुलसे अधेड़ की इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना में घर की पूरी गृहस्थी भी जलकर राख हो गई। सुंदरपुर गांव निवासी सजीवन (55) बीती रात अचानक घर में लगी आग की चपेट में आ गए। आग

इतनी भीषण थी कि वह करीब 90 प्रतिशत तक झुलस गए। परिजनों ने उन्हें तत्काल जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां से हालत गंभीर होने पर ट्रामा सेंटर रेफर किया गया। जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। परिजनों का आरोप है कि गांव के ही एक युवक ने इस घटना को अंजाम दिया है। घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई है। थाना प्रभारी रवि सिंह ने बताया कि अभी तक कोई लिखित तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है।

रुपईडीहा से नवाबगंज पहुंचा, हमले में दो ग्रामीण हुए घायल

लखनऊ, (संवाददाता)। बहराइच के रुपईडीहा क्षेत्र में दहशत फैलाने के बाद बृहस्पतिवार सुबह बाघ ने नवाबगंज इलाके में दस्तक दे दी है। सुबह करीब 6रू30 बजे ग्राम पंचायत चनैनी में गांव के बाहर शौच के लिए गई महिलाओं ने बाघ को देखकर शोर मचाया। महिलाओं को बचाने दौड़े दो ग्रामीणों पर बाघ ने हमला कर दिया, जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। गांव में अफरा–तफरी का माहौल है। वन विभाग की टीम कॉबिंग में जुटी है। ग्रामीणों के अनुसार सुबह महिलाएं गांव से बाहर शौच के लिए गई थीं

, तभी झाड़ियों से निकलकर बाघ दहाड़ा। महिलाओं की चीख–पुकार सुनकर गांव के लोग मौके की ओर दौड़े। इस दौरान बाघ ने चनैनी गांव निवासी राम धीरज यादव (50) और नागे कश्यप (35) पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया। ग्रामीणों के शोर मचाने पर बाघ जंगल की ओर चला गया घटना से गांव में दहशत फैल गई और बड़ी संख्या में लोग मौके पर जमा हो गए। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है। डीएफओ राम सिंह यादव ने बताया कि टीम को मौके पर भेज दिया गया है। क्षेत्र की घेराबंदी कर बाघ की तलाश की जा रही है। ग्रामीणों से सतर्क रहने और अकेले बाहर न निकलने की अपील की गई है। वन विभाग की टीम लगातार निगरानी कर रही है।

फंदे से लटका मिला होटल कर्मी का शव

लखनऊ, (संवाददाता)। नबीपनाह पंचायत के मजरे बख्खा खेड़ा गांव में बुधवार शाम होटल कर्मी मनीष मौर्य (19) का शव उसी के दूसरे खाली पड़े मकान में रस्सी के सहारे फंदे से लटका मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया है। मनीष के पिता ठाकुर प्रसाद ने बताया कि उनका अविवाहित बेटा चंडीगढ़ के होटल में काम करता था। वह 15 दिन पूर्व गांव आया था। वह दिन में तीन बजे सिम पोर्ट कराने नबीपनाह जाने की बात कह रहा था, लेकिन वहां न जाकर दूसरे मकान की चाबी लेकर चला गया। काफी देर तक उसके घर वापस न आने पर मां सुभाषिनी मकान पर गईं, जहां एक कमरे का दरवाजा अंदर से बंद मिला। जानकारी होते ही मौके पर पहुंचे परिजनों और पड़ोसियों ने दरवाजा तोड़कर देखा तो मनीष का शव छत की कुंडी से लटका मिला। मृतक के बड़े भाई आकाश और माता–पिता का रो रोकर बुरा हाल हो गया। इंस्पेक्टर नवाब अहमद ने बताया कि आत्महत्या का कारण अभी तक पता नहीं चल सका है।

आकाश आनंद को पिता बनने पर मायावती ने दी बधाई

लखनऊ, (संवाददाता)। बसपा सुप्रीमो मायावती ने पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक आकाश आनंद को पिता बनने पर बधाई दी है और कहा कि परिवार में नए सदस्य के आगमन पर सभी खुश हैं। उन्होंने कहा कि इससे भी ज्यादा खुशी की बात है कि आकाश ने बेटी को बहुजन मिशन के लिए तैयार करने की इच्छा जताई है

जो कि खुशी की बात है। उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स पर कहा

कि बहुजन समाज पार्टी (बी.एस.पी.) के राष्ट्रीय संयोजक आकाश आनन्द को पुत्री के रूप में परिवार में नई सदस्य की प्राप्ति पर सभी लोगों में खुशी की लहर है तथा उनके लिये इससे भी ज्यादा हर्ष व गौरव की बात यह है

कि आकाश ने अपनी बेटी को माननीय बहनजी की तरह ही बहुजन समाज के मिशन के प्रति समर्पित करने के लिये तैयार करने की इच्छा व्यक्त की है, जिसका भरपूर स्वागत। मां और बेटी दोनों पूरी तरह से स्वस्थ हैं। बता दें कि आकाश आनंद को बसपा का उत्तराधिकारी घोषित किया गया है। वो लगातार पार्टी के विस्तार के लिए काम कर रहे हैं।

धर्मांतरण का मुद्दा गरमाया, एनएमओ का प्रदर्शन

लखनऊ, (संवाददाता)। केजीएमयू में महिला डॉक्टर के धर्मांतरण के प्रयास का मुद्दा तूल पकड़ चुका है। इस मामले में विभिन्न संगठनों के बाद अब नेशनल मेडिकोज आर्गेनाइजेशन (एनएमओ) भी महिला रेजिडेंट डॉक्टर के पक्ष में आ गया है। बुधवार को एनएमओ ने पैथोलॉजी विभाग के सामने प्रदर्शन भी किया ।प्रदर्शनकारियों ने केजीएमयू गेट से लेकर कुलपति ऑफिस तक नारेबाजी की। इस दौरान एनएमओ के पदाधिकारियों और केजीएमयू के अधिकारियों के बीच झड़प भी हुई। सुरक्षाकर्मियों ने किसी तरह मामला शांत कराया। इसके बाद महानगर इकाई के संयोजक डॉ.

शिवम कृष्णन, संगठन मंत्री डॉ. कपिल शर्मा ने कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानंद से मुलाकात भी की। उन्होंने मांग किया कि आरोपी रेजिडेंट डॉक्टर की डिग्री रद्द की जाए। नीट पीजी से उसका दाखिला रद्द कराने की भी सिफारिश की जाए। डॉ. कपिल शर्मा ने कहा कि पैथोलॉजी विभाग के उन संकाय सदस्यों की भी पहचान की जाए, जो आरोपी का साथ दे रहे थे।

आरोपी रेजीडेंट की गिरफ्तारी न होने से परिवार दहशत में

लखनऊ, (संवाददाता)। केजीएमयू के पैथोलॉजी विभाग में धर्मांतरण प्रयास के आरोपी रेजिडेंट डॉक्टर पर अभी तक पुलिस का शिंकजा नहीं कसा है। मुकदमा दर्ज होने के बाद भी रेजिडेंट डॉक्टर गिरफ्तार नहीं हुआ है। इससे पीड़िता व उसके परिवार के सदस्य दहशत में हैं। पैथोलॉजी विभाग की महिला रेजिडेंट ने 17 दिसंबर को नशीली गोलियां खाकर खुदकुशी की कोशिश की थी। गंभीर अवस्था में उसे ट्रॉमा सेंटर की आईसीयू में भर्ती किया गया था। पीड़िता ने पैथोलॉजी विभाग के पुरुष रेजिडेंट डॉक्टर पर शादी से पहले धर्म बदलने का दबाव डालने व दुष्कर्म का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री जन सुनवाई पोर्टल, राज्य महिला आयोग, केजीएमयू प्रशासन से शिकायत की। फिर चौक कोतवाली में मुकदमा भी दर्ज कराया था। केजीएमयू की विशाखा कमेटी ने आरोपी रेजिडेंट डॉक्टर को जांच में दोषी पाया। इस रिपोर्ट के आधार पर केजीएमयू प्रशासन ने आरोपी डॉक्टर को निलंबित कर दिया है। परिसर व हॉस्टल में दाखिल होने पर रोक लगा दी है। एनएमओ का कहना है कि अभी तक रेजिडेंट डॉक्टर पर पुलिस ने नकेल नहीं कसी है। परिजनों का कहना है कि वह दहशत में जी रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

वीआईपी मूवमेंट के चलते लगा जाम, रेंगते रहे वाहन

लखनऊ, (संवाददाता)। वीआईपी मूवमेंट के चलते बुधवार शाम चौक और कुकरैल बंधे पर जाम लग गया। लोगों को काफी समस्या का सामना करना पड़ा। बुधवार को चौक स्थित कन्वेंशन सेंटर में पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी की जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजन हुआ था। ऐसे में वहां वीआईपी मूवमेंट के चलते शाम करीब 5रू30 बजे जाम लग गया। जाम के चलते लोगों को काफी समस्या का सामना करना पड़ा। वाहन रेंगते रहे। वहीं शाम 7रू30 बजे कुकरैल बंधे पर भी जाम लगा गया। इस दौरान करीब किलोमीटर तक वाहनों की लाइन लग गई। काफी मशक्कत के बाद यातायात पुलिस कर्मियों ने जाम खुलवाया।

भाजपा मुख्यालय पर दीपांजलि का आयोजन

लखनऊ, (संवाददाता)। भाजपा मुख्यालय पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को दीपांजलि अर्पित की गई। इस दौरान पूर्व प्रधानमंत्री को नमन किया गया। भाजपा प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में अटलजी ने सुशासन, राष्ट्रीय सुरक्षा नीति पर भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। मौके पर प्रदेश उपाध्यक्ष कान्ताकर्दम, सत्यपाल सिंह सैनी, बृज बहादुर, डॉ. धर्मेंद्र सिंह, प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ला सहित कई भाजपा नेता मौजूद रहे।

एयरपोर्ट के लेबर कैंप में मजदूर ने लगाया फंदा

लखनऊ, (संवाददाता)। लखनऊ एयरपोर्ट के लेबर कैंप में बुधवार दोपहर मजदूर ने फंदा लगाकर जान दे दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। पुलिस के मुताबिक मूल रूप से पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के अली चोरा निवासी सुभाष टुडू (26) लखनऊ एयरपोर्ट के लेबर कैंप में कुछ अन्य साथियों के साथ रहकर मजदूरी करता था। वह पिछले चार–पांच दिनों से छुट्टी पर था। बुधवार को उसके साथी काम पर चले गए, जबकि वह कमरे में ही था। दोपहर करीब 1रू30 बजे साथी मजदूर खाना खाने पहुंचे तो दरवाजा अंदर से बंद मिला। उन लोगों ने कमरे के पीछे लगी खिड़की से जाकर देखा तो सुभाष लोहे के चौनल से साड़ी के सहारे लटका मिला। खिड़की तोड़कर कमरे के अंदर गए साथियों ने उसे नीचे उतारा और लोक बंधु अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। थाना प्रभारी राजदेव प्रजापति का कहना है कि सुभाष ने यह कदम क्यों उठाया, इसका कारण स्पष्ट नहीं हो सका है, मामले की जांच की जा रही है।

प्रयोगशाला से आईटीआई विद्यार्थियों को मिलेगा प्रशिक्षण

लखनऊ, (संवाददाता)। कौशल विकास विभाग के निदेशक पुलकित खरे ने बुधवार को अलीगंज स्थित राजकीय आईटीआई का निरक्षण किया। टाटा टेक्नोलॉजी के सहयोग से बनाई आधुनिक प्रयोगशाला का जायजा लिया। प्रधानाचार्य राजकुमार यादव ने बताया कि निदेशक ने मशीनों, उपकरणों पर काम करवाकर अनुदेशकों व प्रशिक्षार्थियों से फीडबैक लिया।

हैरान कर देने वाला कदम, लखनऊ में पालतू कुत्ते के बीमार होने से परेशान दो बहनों ने दे दी जान

संवाददाता, लखनऊ। पालतू कुत्ते के लंबे समय से बीमार होने के कारण दो सगी बहनों ने लखनऊ में अपनी जान दे दी। जर्मन शेफर्ड नस्ल का कुत्ता बीमार था और उसके ठीक न होने पर दोनों बहनें डिप्रेशन में आ गईं। एक महीने से बीमार पालतू कुत्ते के सही न होने से सगी बहनें डिप्रेशन में आ गई थी। उसे खो देने के डर से दोनों बहनों फिनायल पीकर आत्महत्या कर ली। एक की मौत अस्पताल पहुंचते ही हो गई, जबकि दूसरी ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हंसते–खेलते घर में एक साथ उठी दो अर्थियों ने पूरे इलाके को गमगीन कर दिया। पारा थाना के जलालपुर के दोदाखेड़ा गांव की 24 वर्षीया राधा सिंह व 22 वर्षीय जिया सिंह ने फिनायल पी लिया है। ग्रेजुएशन के बाद दोनों परिवार के साथ रहती थीं। भाई वीर सिंह ने बताया कि दोनों बहनों ने घर में जर्मन शेफर्ड नस्ल का एक डाग पाल रखा था, जिसका नाम टोनी है। टोनी एक महीने से बीमार चल रहा था। उसका लगातार इलाज कराया जा रहा था, लेकिन हालत में कोई खास सुधार नहीं हो रहा था। इसी बात को लेकर दोनों बहनें बेहद परेशान और डिप्रेशन में थीं। मां गुलाबा देवी ने बुधवार को दोनों बेटियों को पास की दुकान से घरेलू सामान लेने भेजा था। दुकान से लौटने के कुछ देर बाद दोनों की हालत बिगड़ने लगी। कराहती हुई मां के पास पहुंचीं और बताया कि उन्होंने फिनायल पी लिया है। मां ने तुरंत उन्हें फोन कर बेटे को सूचना दी। आसपास के लोगों की मदद से दोनों को रानी लक्ष्मीबाई अस्पताल पहुंचाया गया। हालत गंभीर देख डाक्टरों ने दोनों को ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया, लेकिन राधा की रास्ते में ही मौत हो गई। ट्रामा सेंटर में इलाज के दौरान जिया ने भी दम तोड़ दिया। पुलिस ने दोनों शवों का पोस्टमार्टम कराकर परिवार को सौंप दिया है। वीर सिंह ने बताया कि दोनों बहनें टोनी(कुत्ते) से बेहद प्यार करती थीं। अगर टोनी खाना नहीं खाता था, तो वे भी खाना छोड़ देती थीं। छोटी बहन जिया की मानसिक स्थिति पहले से भी पूरी तरह ठीक नहीं थी और वह जल्दी अवसाद में चली जाती थी। कुत्ते की लगातार बिगड़ती हालत ने दोनों को अंदर से तोड़ दिया था। पड़ोसियों के मुताबिक, पिता कैलाश सिंह रुई धुनाई का काम करते थे, वह भी पिछले छह महीने से बीमार हैं और बिस्तर पर हैं। परिवार एक बेटे को सात वर्ष पहले ब्रेन हेमरेज में खो चुका है। अब दो बेटियों की एक साथ मौत ने माता–पिता की कमर तोड़ दी है। मां गुलाबा देवी का रो–रोकर बुरा हाल है। वह बार–बार एक ही बात दोहरा रही थीं कि बेटियों ने आखिरी वक्त में उनसे कहा था कि मां, हमारे मरने के बाद डागी को घर से मत भगाना, उसकी दवा कराते रहना।मां के लिए अब यह वाक्य ही उनकी बेटियों की आखिरी निशानी बन गया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है, हालांकि प्रारंभिक जांच में आत्महत्या की ही पुष्टि हुई है।

पत्नी से झगड़े के बाद युवक ने की खुदकुशी

लखनऊ, (संवाददाता)। चिनहट के निजामपुर मल्हौर निवासी ठेलिया चालक सुमित रावत (20) ने मंगलवार रात घर में फंदा लगाकर जान दे दी। सुमित के बहनोई जीवन के अनुसार मंगलवार दोपहर सुमित और उसकी पत्नी कोमल के बीच किसी बात पर विवाद हो गया था। कोमल नाराज होकर काकोरी के बाजनगर अपने मायके चली गई थी। सुमित अपने कमरे में चला गया था। थोड़ी देर के बाद छोटी बहन शिवांगी खाने के लिए बुलाने पहुंची तो उसे पंखे से साड़ी के सहारे लटका देखा। शोर सुन परिजन सुमित को फंदे से उतारकर लोहिया अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इंस्पेक्टर चिनहट दिनेश चंद्र मिश्र का कहना है कि जांच में पता चला है कि सुमित ने पारिवारिक कलह के चलते आत्महत्या की है। सुमित के बहनोई जीवन ने बताया उनके बड़े साले सुभाष की दो वर्ष पहले पानी में डूबकर मौत हो गई थी। इसके बाद सुभाष की पत्नी कोमल से सुमित ने छह महीने पहले मंदिर में जाकर शादी कर ली थी। सुमित के परिवार में तीन भाई और एक बहन शिवानी हैं।

गुरु गोबिंद सिंह के बेटों के बलिदान की गाथा सुनाई

लखनऊ, (संवाददाता)। सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह के बेटों बाबा अजीत सिंह, बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के अदम्य साहस और बलिदान की गाथा बुधवार को वीर बाल दिवस के दिन कस्बे में प्रभात फेरी के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाई गई। जिला कार्यक्रम सह संयोजक सरदार नरेंद्र सिंह ने बताया कि गुरु गोबिंद सिंह के इन चारों बेटों के बलिदान एवं अदम्य साहस युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का केंद्र है। उनके त्याग और बलिदान से हमको यह सीखने को मिलती है कि कठिनाइयों के बावजूद धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। कार्यक्रम के जिला संयोजक व भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विवेक सिंह चौहान ने बताया कि प्रभात फेरी एयरफोर्स रोड से शुरू होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए गुरुद्वारा जाकर समाप्त हुई। प्रभात फेरी के समापन के बाद उपस्थित लोगों ने गुरुद्वारे में माथा टेका और भजन–कीर्तन सुना। इसमें स्कूली बच्चे, किसान मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष अरुण सिंह, जिला उपाध्यक्ष रवि प्रकाश तिवारी, मंडल अध्यक्ष संदीप यादव, कुलदीप सिंह, राजेंद्र लोधी, राम बहादुर सिंह, संजेश सिंह, कृष्ण कुमार सिंह व एडिशनल इंस्पेक्टर कैलाश दुबे पुलिस टीम के साथ शामिल रहे।

राष्ट्र के उत्थान में समर्पित रहा महामना का जीवन

लखनऊ, (संवाददाता)। महामना मालवीय मिशन विवेक खंड, गोमतीनगर की ओर से भारत रत्न मदन मोहन मालवीय की 164वीं जयंती की पूर्व संध्या पर बुधवार को समारोह का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता कर रहे मिशन के संरक्षक प्रभु नारायण श्रीवास्तव ने कहा कि मालवीय के समान व्यक्तित्व का अभी तक जन्म नहीं हुआ। मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता राष्ट्रीय चिंतक एवं विचारक पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ ने कहा कि महामना का संपूर्ण जीवन राष्ट्र, समाज व शिक्षा के उत्थान में समर्पित रहा। उनके विचार आज भी समाज को सही दिशा देते हैं। कुलश्रेष्ठ ने कहा कि भारत कर्म प्रधान देश रहा है न कि जाति प्रधान। मिशन के वरिष्ठ सदस्य आरएन वर्मा को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। मिशन के प्रचार सचिव वीपी श्रीवास्तव एवं संगठन सचिव प्रदीप मिश्रा की ओर से वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यालय को शील्ड दी गई। अवसर पर कक्षा दो की छात्रा को श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का सस्वर पाठ करने पर प्रशस्ति पत्र दिया गया।

एलआईसी के पासवर्ड का इस्तेमाल कर फर्जी बीमा करने वाले को पांच साल की सजा

संवाददाता, लखनऊ। एलआईसी के पासवर्ड का दुरुपयोग कर फर्जी बीमा एवं फर्जी वेतन बचत योजना के दस्तावेजों के जरिए लाखों का भुगतान कर लाभ कमाने के आरोपित ब्रज कुमार पांडेय एवं मनीष कुमार श्रीवास्तव को सीबीआइ की विशेष अदालत ने पांच वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है साथ ही व दोषियों पर 12–12 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। न्यायालय के समक्ष सीबीआइ के अधिवक्ता ने बताया कि नवंबर 2001 से अप्रैल 2003 के बीच गोरखपुर शाखा में प्रोसेसिंग आपरेटर के पद पर काम करते हुए आरोपित प्रदीप कुमार पांडे ने अपराधिक षड्यंत्र करते हुए अन्य लोगों से साठगांठ करके लगभग 15 लाख 22 हजार 689 रुपये की पहुंचाई। बताया गया कि आरोपितों ने ब्रांच आफिस के पासवर्ड का दुरुपयोग कर फर्जी पालिसी बांड व सैलरी सेविंग स्कीम के कागज तैयार कर धोखाधड़ी करते हुए 20 पालिसीज का फर्जी भुगतान कर दिया। सीबीआइ ने मुकदमा दर्ज करने के बाद जांच पूरी कर दस जनवरी 2007 को प्रदीप कुमार पांडे, ब्रज कुमार पांडे, मनीष कुमार श्रीवास्तव, पंकज कुमार रावत ,अमर नाथ पांडे व धनंजय कुमार उपाध्याय के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। जिसमें अदालत ने ब्रज कुमार पांडे व मनीष कुमार श्रीवास्तव को दोषी कर देते हुए कैद एवं जुर्माने की सजा सुनाई है। जबकि पंकज कुमार रावत एवं धनंजय कुमार उपाध्याय को संदेह का लाभ देकर आरोपो से बरी कर दिया है। मुकदमे के विचारण के दौरान प्रदीप कुमार पांडे एवं अमरनाथ पांडे की मृत्यु हो गई।

बच्चों ने आंचलिक विज्ञान केंद्र का किया भ्रमण

लखनऊ, (संवाददाता)। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत विकास खंड बक्शी का ताला के परिषदीय व कंपोजिट विद्यालयों के ब्लॉक स्तर पर चयनित 100 बच्चों को आंचलिक विज्ञान केंद्र अलीगंज की सैर कराई गई। खंड शिक्षा अधिकारी प्रीति शुक्ला ने बताया कि ब्लॉक स्तर पर चयनित 10 बच्चे जिले की प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। एआरपी क्षमा तिवारी, कुमकुम तिवारी, अनुराग सिंह राठौड़, ज्ञानेंद्र शंकर त्रिपाठी, आशुतोष मिश्रा, नीरज मिश्रा, सावित्री मौर्य सहित कई शिक्षक उपस्थित रहे।

दिव्यांग बच्चों के चेहरे पर खिली मुस्कान, मेरा गांव मेरी जिम्मेदारी ने बांटे गर्म कपड़े

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। श्मेरा गांव मेरी जिम्मेदारीश अभियान के अंतर्गत संचालित कार्यक्रम ष्इस सर्दी खुशियां बांटेंष के तहत शनिवार को एक नेक पहल की गई। इस कड़कड़ाती ठंड को देखते हुए राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन के दिव्यांग बच्चों को गर्म इनर और टोपियां वितरित की गईं। यह पुनीत कार्य जालना (महाराष्ट्र) की वंदना मिश्रा, मुंबई के देवेन्द्र मिश्रा एवं प्राथमिक विद्यालय ऊचवाँहौज, सिरकोनी (जौनपुर) की प्रधानाध्यापिका पूनम मिश्रा के सामूहिक आर्थिक और नैतिक सहयोग से संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने अपने विचार साझा किए। प्रदीप मिश्रा (प्रणेता, मेरा गांव मेरी जिम्मेदारी) ने बताया कि हमारा उद्देश्य समाज के उस अंतिम व्यक्ति तक मदद पहुँचाना है जिसे इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है। कड़कड़ाती ठंड में इन दिव्यांग बच्चों को राहत पहुँचाकर हमें जो आत्मिक संतोष मिला है, वह शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।ष डॉ. राजेश कुमार (संस्थापक, राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन) ने कहा कि ष्संस्था के बच्चों के प्रति समाज का यह जुड़ाव सराहनीय है। मदद के ये हाथ न केवल बच्चों को ठंड से बचाएंगे, बल्कि उनके भीतर यह विश्वास भी जगाएंगे कि समाज उनके साथ खड़ा है।ष पूनम मिश्रा (प्रधानाध्यापिका) ने स्वयं अपने हाथों से बच्चों को कपड़े पहनाते हुए उन्होंने भावुक होकर कहा, ष्इन बच्चों की मुस्कान ही हमारी असली पूंजी है। शिक्षा के साथ–साथ सेवा भाव का होना भी अनिवार्य है, ताकि हम एक संवेदनशील समाज का निर्माण कर सकें।ष इस वितरण कार्यक्रम के दौरान दिव्यांग बच्चों के माता–पिता के साथ ही अधिवक्ता प्रखर मिश्रा भी उपस्थित रहे और इस मानवीय कार्य की सराहना की। संस्था की अध्यापिका हेमू मैडम ने गर्म कपड़े बांटने में सहयोग किया।

सेवानिवृत्त डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर राजेंद्र प्रसाद मिश्र का निधन, क्षेत्र में शोक

ब्यूरो चीफ : आलोक कुमार श्रीवास्तव

सुल्तानपुर । तहसील क्षेत्र बल्दीराय अंतर्गत ग्राम पंचायत रामनगर धनपतगंज के पूरे राम भदर मिश्र गांव के मूल निवासी तथा उत्तर प्रदेश शासन में डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर पद से सेवानिवृत्त श्री राजेंद्र प्रसाद मिश्र का लंबी बीमारी के बाद 26 दिसंबर को मेदांता हॉस्पिटल, लखनऊ में सुबह 8रू30 बजे निधन हो गया। आज उनका अंतिम संस्कार गोमती नदी के तट स्थित सरैया घाट पर विधि–विधान के साथ किया गया। निधन की सूचना मिलते ही पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। श्री मिश्र वर्ष 2017 में डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर पद से सेवानिवृत्त हुए थे। विगत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे, जिनका इलाज मेदांता हॉस्पिटल गुरुग्राम सहित प्रदेश के कई नामी–ग्रामी अस्पतालों में कराया गया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। श्री मिश्र अपने सरल स्वभाव, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के लिए

जाने जाते थे। गांव से लेकर शहर तक उन्होंने अपनी साफ–सुथरी छवि और कार्यकुशलता से विशेष पहचान बनाई। इतने उच्च पद पर रहते हुए भी वे गांव, परिवार और समाज से गहरा जुड़ाव बनाए रखते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंटरमीडिएट तक पी. पी. इंटर कॉलेज, वलीपुर सुल्तानपुर से हुई तथा स्नातक की पढ़ाई इलाहाबाद विश्वविद्यालय से की। वर्ष 1984 में कमीशन क्वालीफाई कर उन्होंने क्षेत्र का नाम रोशन किया। वे तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। उनके दो भाई गांव में रहकर खेती–किसानी करते हैं, जिन्हें बड़े भाई का भरपूर सहयोग मिलता रहा। उनके सहयोग से दोनों भाई क्षेत्र में सफल और प्रगतिशील किसान के रूप में पहचाने जाते हैं। मिश्र परिवार में भाईचारे और आपसी प्रेम की मिसाल दी जाती रही है पूरा परिवार एक साथ रहकर जीवन की अनेक ऊंचाइयों तक पहुंचा और समाज में सम्मान प्राप्त किया श्री मिश्रा का सहयोगात्मक स्वभाव और सामाजिक सरोकारो की पूरे क्षेत्र में सराहना होती रही। श्री मिश्र अपने पीछे तीन पुत्रीयों को छोड़ गए हैं उन्होंने अपने जीवन काल में अपनी सभी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा से किया। उनकी पत्नी ने बताया की श्री मिश्र सरकारी दायित्वों के साथ–साथ परिवार और समाज की जिम्मेदारियां को हमेशा प्राथमिकता दी उनके निधन से क्षेत्र ने एक ईमानदार कर्तव्य–निष्ठ एवं समाजसेवी व्यक्तित्व को खो दिया है।

संक्षिप्त खबरें

चर्चों में गूंजा जिंगल बेल, मसीही समाज ने की प्रार्थना

भदोही, (संवाददाता)। पड़ाव स्थित मिशन कंपाउंड और सेंट थामस स्कूल में ईसाई समाज ने बुधवार की मध्य रात्रि के बाद प्रभु यीशु का जन्मोत्सव मनाया। विशेष प्रार्थना सभा के साथ ही मैरी क्रिसमस की लोगों ने एक–दूसरे को बधाई दी। सोशल मीडिया पर क्रिसमस की धूम रही। झालरों से सजकर तैयार सीएनएनआई चर्च और विद्यालय देर रात तक मैरी क्रिसमस की धुन से गुंजायमान होता रहा। बृहस्पतिवार की सुबह पादरी प्रवीन सूर्यस ने कैंडल प्रज्ज्वलित करके समारोह का शुभारंभ किया। विशेष प्रार्थना सभा के बाद प्रभु यीशु का संदेश दिया। पादरी ने कहा कि प्रभु यीशु पूरी दुनिया में भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। ऊंच–नीच की खाई पाटने में समाज के अंदर उनकी प्रमुख भूमिका रही है। वह गरीबों एवं असहाय के बीच रहना ज्यादा पसंद करते थे, इसलिए वह हर व्यक्ति के लिए प्रिय साबित हुए। ईसा मसीह के जीवन पर आधारित कार्यक्रम और जिंगल बेल की प्रस्तुति फैंसी ड्रेस कैटवाक की प्रस्तुति कर बच्चों ने मन मोह लिया। कंपाउंड में माता मरियम के साथ बालक यीशु का प्रतिरूप घास फूस से बनी झोपड़ी में जानवरों के साथ प्रभु यीशु के बाल स्वरूप को प्रस्तुत किया गया। चर्च भवन को रंग–बिरंगी रोशनी गुब्बारों फूलों चांद सितारों से सजाया गया था। फादर ने बताया कि ऐसी मान्यता है कि प्रभु यीशु का जन्म आधी रात को ही हुआ था, इसलिए उनके अवतरण की खुशी में देर रात जश्न मनाया जाता है। चर्च में मसीही परिवार समेत तमाम श्रद्धालु मौजूद रहे। एक दूसरे को क्रिसमस की बधाई दी।

पाली में 1.41 करोड़ से बनेगा पंचायत उत्सव भवन

भदोही, (संवाददाता)। ज्ञानपुर के पाली में एक करोड़ 41 लाख की लागत से पंचायत उत्सव भवन बनेगा। पंचायत राज विभाग ने जमीन चिह्नित करके प्रस्ताव शासन को भेज दिया है। इसमें गरीब बेटियों की शादी से लेकर अन्य सार्वजनिक कार्यक्रम कराए जाएंगे। सबकुछ ठीक रहा तो नए साल में इसका निर्माण शुरू हो जाएगा। जिले में 546 ग्राम पंचायतें है। गांव को आर्थिक एवं समृद्ध बनाने की पहल शासन स्तर से की जा रही है। इसके लिए सामुदायिक शौचालय, पंचायत भवन का निर्माण पहले किया जा चुका है। अब जिले की तीनों विधानसभा में एक–एक पंचायत उत्सव भवन का निर्माण होना है। साल 2025 में एक पंचायत उत्सव भवन का लक्ष्य मिला था। जिसके लिए ज्ञानपुर विधानसभा के पाली में जमीन का चयन किया गया है। पंचायत उत्सव भवन के निर्माण पर एक करोड़ 41 लाख रुपये खर्च होंगे। दो मंजिला भवन में निजी गेस्ट हाउस की तरह चकाचौंध, आधुनिक और उत्कृष्ट व्यवस्थाएं होंगी। इस भवन में मांगलिक कार्यक्रमों में जरूरी व आने वाले मेहमानों के लिहाज से सभी प्रकार की सुविधाएं मिलेंगी। गांव के आर्थिक रूप से कमजोर माता–पिता बेटियों के विवाह पर अब प्राइवेट गेस्ट हाउस के समान इन उत्सव भवनों में शादी कर सकेंगे। इसकी बुकिंग बेहद कम रुपये में होगी और मामूली खर्च पर मांगलिक कार्यक्रम संपन्न करने के लिए दिया जाएगा। इससे संबंधित गांव की आय बढ़ेगी। डीपीआरओ संजय कुमार मिश्रा ने कहा कि पंचायत उत्सव भवन के लिए पाली में गांव चिह्नित की गई है।

'जन कल्याणकारी योजनाओं पर तीन दिवसीय प्रदर्शनी का हुआ शुभारंभ'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'पाली(हरदोई)' कस्बे के रामलीला मैदान में उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से संबंधित प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन ब्लॉक प्रमुख संघ के प्रदेश अध्यक्ष आदरणीय धीरेन्द्र प्रताप सिंह जी के द्वारा फीता काटकर किया गया। यह प्रदर्शनी तीन दिवसीय 27, 28, 29 दिसंबर तक जन सामान्य के दर्शनार्थ लगी रहेगी। प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदेश सरकार द्वारा किन–किन योजनाओं को जनहित में चलाया जा रहा है,किस प्रकार उसका लाभ अधिकाधिक लोग लेंगे इसका प्रदर्शन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि ने इस प्रदर्शनी को जनहित में लगाया जाना बताया और कहा कि इसके माध्यम से लोगों को योजनाओं के बारे में जानकारी मिलती है। योजनाओं को सरकार जनता के लिए लागू करती है परंतु जानकारी न होने के कारण लोग इसका लाभ नहीं ले पाते है। क्षेत्र की जनता प्रदर्शनी को देखकर योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर लाभ के भागीदार बन सकती हैं। इस अवसर पर मुख्य रूप से मंडल अध्यक्ष राकेश रंजन त्रिवेदी, पूर्व मंडल अध्यक्ष शिवम तिवारी, दीपांशु सिंह, अजीत बाजपेई, अशुतोष मिश्र, रजत मिश्र, शिवम बाजपेई, सत्येंद्र सिंह, रामू कुशवाहा, श्याममोहन मिश्र, श्रीपाल कश्यप, नीरज, आकाश गुप्ता, अभय त्रिवेदी, आशीष, मनोज, कन्हैया, आदि लोग मौजूद रहे।

चाइनीज मांझे की चपेट में आने से युवक घायल,लोगों में आक्रोश

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर जिले में प्रतिबंधित चाइनीस मांझा लगातार लोगों की जान का दुश्मन बनता जा रहा है। आए दिन गर्दन कटने की घटनाओं से लोग असमय मौत की नींद सोने को मजबूर हो रहे हैं, लेकिन जिम्मेदारों पर नकेल कसने में जिला प्रशासन पूरी तरह सफल होता नजर नहीं आ रहा है। प्रशासन द्वारा चाइनीस मांझे के खिलाफ चलाया जा रहा अभियान महज औपचारिकता बनकर रह गया है, जबकि बड़े कारोबारी बेखौफ होकर बाजारों में इसकी बिक्री कर रहे हैं और कार्रवाई सिर्फ छोटे दुकानदारों तक सीमित दिखाई दे रही है। बीते दिनों नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के काली कुट्टी मोहल्ला निवासी एक शिक्षक अपनी बेटी को स्कूल छोड़कर लौट रहे थे। इसी दौरान शास्त्री पुल पर चाइनीस मांझे की चपेट में आकर उनकी गर्दन कट गई और उनकी दर्दनाक मौत हो गई। यह घटना अभी लोगों के जेहन से उतरी भी नहीं थी कि शुक्रवार को लाइन बाजार थाना क्षेत्र के चांदपुर गांव निवासी एक युवक भी चाइनीस मांझे का शिकार हो गया। चांदपुर गांव निवासी यशवंत यादव ओलंदगंज से काम करके वापस लौट रहे थे। जैसे ही वे जौनपुरदृमिर्जापुर मार्ग स्थित ओवरब्रिज के पास पहुंचे, उड़ती पतंग के चाइनीस मांझे ने उनकी गर्दन को बुरी तरह काट दिया। मौके पर मौजूद लोगों ने तत्परता दिखाते हुए पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल युवक को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां समय रहते इलाज होने से उसकी जान बच गई। चिकित्सकों के अनुसार यदि कुछ देर और हो जाती तो हादसा जानलेवा साबित हो सकता था। घटना के बाद से युवक इतना भयभीत है कि वह ठीक से बोल भी नहीं पा रहा है। चाइनीस मांझे के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिए 'किलर मांझा प्रतिबंधित अभियान समिति' द्वारा शहर में लगातार पोस्टर और बैनर लगाए जा रहे हैं। समिति की ओर से इस गंभीर समस्या को लेकर जिलाधिकारी को ज्ञापन भी सौंपा गया था, बावजूद इसके घटनाओं पर रोक नहीं लग पा रही है। लगातार हो रही दुर्घटनाओं से साफ है कि जिला प्रशासन चाइनीस मांझे की अवैध बिक्री पर पूरी तरह अंकुश लगाने में नाकाम साबित हो रहा है। जब तक बड़े सप्लायरों और कारोबारियों पर सख्त कार्रवाई नहीं होगी, तब तक आम जनता इसी तरह इस जानलेवा मांझे का शिकार होती रहेगी। जिलेवासियों ने प्रशासन से मांग की है कि कड़े कदम उठाकर चाइनीस मांझे की बिक्री और उपयोग पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया जाए, ताकि और निर्दोष लोगों की जान न जाए।

संक्षिप्त खबरें

ठंड लगने से एक यात्री की मौत

ब्यूरो चीफ : आलोक कुमार श्रीवास्तव

सुल्तानपुर जंक्शन के प्लेटफॉर्म नंबर दो पर एक यात्री की ठंड से मौत हो गई। मृतक का शव लंबे समय तक कुर्सी पर पड़ा रहा,जिससे रेलवे प्रशासन की लापरवाही उजागर हुई।जानकारी के अनुसार अधेड़ व्यक्ति को अचेत अवस्था में देख यात्रियों ने सूचना दी,लेकिन करीब दो घंटे तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। इस दौरान रेलवे सुरक्षा बल और राजकीय रेलवे पुलिस के बीच जिम्मेदारी को लेकर खींचतान होती रही।बाद में आरपीएफ की टीम मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू की गई।मृतक की शिनाख्त नहीं हो सकी है।

कर्मचारी से एक लाख की ठगी न्यायलय के आदेश पर मुकदमा दर्ज

ब्यूरो चीफ : आलोक कुमार श्रीवास्तव

सुलतानपुर । रेल कर्मचारी से ऑनलाइन एक लाख की साइबर ठगी अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश पर नगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज ओटीपी पूछ कर दो किस्तों में अकाउंट से पार किया ध्1 लाख सुलतानपुर जंक्शन पर तैनात कर्मचारी रेल योगेंद्र प्रसाद से जुड़ा मामला 20 सितंबर 2024 को हुई घटना के बाद लगातार साइबर थाने में मुकदमा दर्ज करने की कर रहा था कर्मचारी मांग नहीं दर्ज किया गया था साइबर थाने में मुकदमा नगर कोतवाल धीरज कुमार बोले कोर्ट के आदेश पर मुकदमा दर्ज कर की जा रही विवेचना।

किंग ऑफ जौनपुर और 19 फेलोज ने जीते अपने–अपने मैच

भदोही, (संवाददाता)। भदोही प्रीमियर लीग सीजन चार में बृहस्पतिवार को दो मैच खेले गए। पहले मैच में श्रीऑटो एजेंसी को किंग ऑफ जौनपुर ने 33 रनों से हराया। वहीं, दूसरे मैच 19 फेलो एंड केएनपीजी सुपरकिंग ने शक्ति ढाबा को सात विकेट से शिकस्त दी। जिला पंचायत सदस्य अंजनी शुक्ला ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। पहले मैच में टॉस जीतकर पहले किंग ऑफ जौनपुर ने पहले बैटिंग करते हुए निर्धारित 16 ओवर में 7 विकेट खोकर 134 रन बनाए। इसमें सनी पांडेय ने 39 बॉल पर 53 रन बनाए। बॉलिंग करते हुए ऑटो एजेंसी के परमेश्वर दूबे ने 3 ओवर में 25 रन देकर 3 विकेट लिए। बैटिंग करने उतरी श्रीऑटो एजेंसी ने 16 ओवर 4 विकेट खोकर 111 रन ही बना सकी। मैन ऑफ द मैच सनी पांडेय को दिया गया। वहीं, दूसरा मैच शक्ति ढाबा बनाम 19 फेलोज केएनपीजी सुपर किंग्स के बीच खेला गया। इसमें टॉस जीतकर शक्ति ढाबा पहले बैटिंग करने उतरी। निर्धारित 16 ओवरों में 13 ओवर में ही मात्र 78 पर पूरी टीम धराशाई हो गई। विवेक बिंद ने 3 ओवर में 14 रन देकर 3 विकेट लिए। जवाब में उतरी 19 फेलो एंड केएनपीजी सुपर किंग ने मात्र 10 ओवर में ही तीन विकेट खोकर इस लक्ष्य को छू लिया। 7 विकेट से मैच को जीत लिया।

साइबर सहायता की सक्रियता से मोबाइल बरामद पुलिस ने स्वामि को सुपुर्द किया

ब्यूरो चीफ : आलोक कुमार श्रीवास्तव

सुलतानपुर। स्थानीय पुलिस ने तकनीकी दक्षता और सजग पुलिसिंग का परिचय देते हुए केंद्रीय उपकरण पहचान पंजी (सीईआईआर) पोर्टल पर दर्ज गुमशुदा मोबाइल प्रकरणों की समीक्षा कर 10 मोबाइल फोन सफलतापूर्वक बरामद किए हैं। बरामद किए गए मोबाइल फोन की अनुमानित कुल कीमत घ्1,29,144 बताई गई है, जिन्हें विधिक प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद उनके वास्तविक स्वामियों को सुपुर्द किया जा रहा है। थाना करौंदीकला पुलिस द्वारा गुमशुदा मोबाइलों की बरामदगी के लिए विशेष अभियान चलाया गया था। अभियान के तहत तकनीकी विश्लेषण, निगरानी तंत्र तथा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर गठित पुलिस टीम ने सक्रिय कार्रवाई करते हुए मोबाइल फोन बरामद किए। पुलिस की इस कार्रवाई से मोबाइल गुम होने से परेशान नागरिकों को बड़ी राहत मिली है। पुलिस ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि यदि किसी नागरिक का मोबाइल फोन गुम या चोरी हो जाए तो वे तत्काल केंद्रीय उपकरण पहचान पंजी (सीईआईआर) पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराएं। इससे मोबाइल की खोज में सहायता मिलती है और साइबर अपराध व वित्तीय धोखाधड़ी की संभावनाओं पर भी प्रभावी रोक लगाई जा सकती है। करौंदीकला पुलिस ने जनता के नाम संदेश में कहा है कि नागरिक हित और सुरक्षा के प्रति पुलिस पूर्णतः प्रतिबद्ध है। पुलिस और जनता के बीच आपसी विश्वास एवं सहयोग से ही सुरक्षित समाज का निर्माण संभव है। नागरिकों से अनुरोध किया गया है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें। इस सफल कार्रवाई थानाध्यक्ष ज्ञानेश दूबे, आरक्षी सूरज पटेल, आरक्षी सतेन्द्र सिंह तथा आरक्षी अमित कुमार (साइबर सहायता डेस्क) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि भविष्य में भी जनहित में इस प्रकार की प्रभावी कार्रवाइयाँ निरंतर जारी रहेंगी।

राम मंदिर केवल एक धार्मिक संरचना नहीं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है : वैदेही बल्लभ जी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर यूपी के जौनपुर में तुलसी दिवस के पावन अवसर पर सकल हिंदू समाज द्वारा एक भव्य हिन्दू सम्मेलन का आयोजन नगर के लोहिया पार्क में आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर हिंदू समाज को जागृत करना तथा उसे एकता के सूत्र में पिरोना रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परमपूज्य वैदेही वल्लभ जी (अयोध्या) की गरिमामयी उपस्थिति ने सम्मेलन को विशेष गौरव प्रदान किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने श्रीराम मंदिर निर्माण को हिंदू समाज के आत्मसम्मान, आस्था और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि राम मंदिर केवल एक धार्मिक संरचना नहीं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है, जिसने सदियों के संघर्ष के बाद हिंदू समाज को गौरव की अनुभूति कराई है। सम्मेलन के मुख्य वक्ता काशी प्रांत के प्रांत प्रचारक श्रीमान रमेश जी ने हिंदुओं की एकता और संगठित शक्ति पर जोर देते हुए कहा कि संगठित हिंदू समाज के प्रयासों से देश में ऐतिहासिक परिवर्तन संभव हुए हैं। उन्होंने धारा 370 की समाप्ति को राष्ट्र की अखंडता और सुरक्षा की दिशा में एक साहसिक व ऐतिहासिक कदम बताया। साथ ही शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तनकृसामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्य एवं स्वदेशी जागरणकृपर विस्तार से प्रकाश डाला और राष्ट्रहित में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में संयोजक श्रीमान अरुण जी, श्रीमती बबिता सिंह जी (अध्यक्ष), श्रीमान छाबूलाल सोनकर जी सहित अनेक गणमान्य वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। वक्ताओं ने बांग्लादेश और पाकिस्तान में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह विषय गंभीर चिंतन का है। इस अवसर पर यह पंक्तियां भी उद्धृत की गईंकृ "हिन्दवः सहोदरा सर्वे न हिन्दू पतितो भवेत, मम दीक्षा हिंदू रक्षा मम मंत्र समानता।" अर्थात सभी हिंदू सहोदर भाई हैं, किसी भी हिंदू को पतित नहीं होने देना और अपने हिंदू भाई की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। वक्ताओं ने कहा कि जाति, वर्ग और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर हिंदू समाज को एकजुट होना होगा। हिंदुओं की एकता से ही समाज और राष्ट्र सशक्त बन सकता है। कार्यक्रम के अंत में सर्वसम्मति से यह संकल्प लिया गया कि हिंदू समाज सामाजिक सद्भाव, राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए निरंतर सक्रिय रहेगा। सम्मेलन का समापन राष्ट्रगीत और जयघोष के साथ हुआ। मंच संचालन डॉ. राजीव जी ने किया। कार्यक्रम में जौनपुर विभाग के विभाग प्रचारक आदित्य जी, जिला प्रचारक अमरजीत जी, नगर प्रचारक मंगलेश्वरम जी सहित बड़ी संख्या में नागरिक सज्जनों एवं मातृशक्ति ने उत्साहपूर्वक सहभागिता किया।

पुल निर्माण में पांच पीपे कम, आवागमन शुरू होने में अभी लगेंगे सात दिन

भदोही, (संवाददाता)। जिले को मिर्जापुर से जोड़ने वाले रामपुर घाट पीपा पुल पर आवागमन शुरू नहीं हो सका है। पुल को पूरा करने के लिए पांच पीपे कम पड़ रहे हैं। घाट पर रखे पुराने पीपे को दुरूस्त किया जा रहा है। पुल नहीं शुरू होने से 15 से 20 हजार की आबादी परेशान है। रामपुर घाट से कार्तिक पूर्णिमा गंगा दशहरा के दिन से ही पीपा पुल पर आवागमन शुरू हो जाता था, लेकिन इस साल लगभग दो महीने बाद भी पीपा पुल से आवागमन शुरू नहीं हो सका है। प्रतिदिन मिर्जापुर, भदोही जनपद के व्यापारी, किसान रोजमर्रा के कामकाज से आते–जाते हैं। इस साल गंगा में पानी में अधिक होने से पीपा पुल बनाने में परेशानी का सामना करना पड़ा। हालांकि, अब पीपा पुल निर्माण का काम पूरा हो चुका है, लेकिन अब भी करीब पांच पीपे कम पड़ रहे हैं। इस कारण घाट के पास रखे पुराने पीपे को दुरूस्त कर इसे लगाया जाएगा।

पुल नहीं बनने से स्टीमर के सहारे लोगों का आवागमन होता है। पीडब्ल्यूडी के मेठ रामदुलार ने बताया कि पांच पीपा पुल की कमी है। पुराने पीपे की रिपेयरिंग चल रही है। इसके अलावा चक्कर प्लेट लकड़ी एवं अन्य सभी संसाधन पुल बनाने के लिए मौजूद हैं। बताया कि इसमें एक सप्ताह का समय लग सकता है। पुल निर्माण के लिए कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। जो पीपे कम पड़ रहे हैं। उसके लिए पुराने पीपे को ठीक किया जा रहा है। एक सप्ताह में पुल निर्माण पूरा करके आवागमन चालू कर दिया जाएगा।

दो माइनरों में कटी खांदी, 70 बीघे फसल डूबी

उन्नाव, (संवाददाता)। पानी छोड़े जाते ही माइनरों के उफनाने और खांदी कटने की घटनाएं शुरू हो गईं हैं। चकलवंशी क्षेत्र की दो माइनरों में दो स्थानों पर खांदी कटने से करीब 70 बीघा फसल जलमग्न हो गई। किसानों से फसल बचाने के लिए खुद खांदी की मरम्मत की। तहसील सफीपुर क्षेत्र की शारदा नहर मुख्य ब्रांच से रामपुर और मेथीटीकुर माइनर निकला है। गोपालपुर से नहर के दोनों ओर माइनर निकलते हैं। एक तरफ रामपुर और दूसरी ओर मेथीटीकुर माइनर है। बुधवार को पानी आते ही दोनों माइनर उफना गए और दो जगह खांदी कट गई। इससे मेथीटीकुर के अजय शुक्ला, प्रसादी, मेहरवानखेड़ा के रामनरायन, सरवन, गंगाप्रसाद, कन्हैया खेड़ा के अजय शुक्ला, रघुवीर, जगदेव, रमेश, नत्था, अयोध्या, मोहन, रज्जन, कमलेश, शिवबालक, शिवपाल, रामचरन, संजय ओमप्रकाश, प्रेम, विनोद, रामचरन, गुरुप्रसाद आदि किसानों की 70 बीघा फसलें जलमग्न हो गई। किसानों का कहना है सिंचाई के लिए निर्बाध पानी पहुंचे इसके लिए सिंचाई विभाग हर साल लाखों रुपये नहरों और माइनरों की सफाई में खर्च करता है।

मां की डांट से आहत किशोरी ने फंदा लगाकर दी जान

उन्नाव, (संवाददाता)। मनोहरपुर गांव में फोन पर अधिक बात करने पर मां ने डांट दिया। इससे आहत बेटी ने घर के कमरे में रस्सी का फंदा लगाकर जान दे दी। किशोरी के पिता दुबई में रहते हैं।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 – 7007415808, 9415034002

Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।